शंखनाद

शंखनाद

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN:978-93-5406-546-0

दाम : 200 रूपया

पहिल संस्करण :2020

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

शंखनाद

A Maithili Novel
by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि जौँ ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

समर्पण



हमर सासु पू. स्व. दुर्गा देवी(पंडौल डीह टोल) क संस्मरणमे

ई पोथी सादरससिनेह हुनके समर्पित

रबीन्द्र

आभार

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि उपन्यासक पाण्डुलीपिकेँ रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ उपन्यासमे गुणात्मक सुधार भेल। हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ)क अमूल्य सुझाव समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ सभ प्रशंसाक पात्र छथि।

देश/विदेशक विभिन्न भागमे रहि रहल मैथिलीप्रेमीसभ हमर पुस्तकसभ कीनि रहल छथि आ अपन उत्साहवर्धक प्रतिकृयासँ हमरा लिखबाक हेतु निरंतर प्रेरित करैत रहलाह अछि । ओ सभ धन्यवादक पात्र छथि ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

१८.०२.२०२०

शंखनाद

१

हरिक पैतृक गाम मदनपुर आ सुरेशक गाम महिपुर सटले छल। दुनूगामक बीचमे परती जमीन रहए । एक समय रहैक जे मदनपुर आ महिपुर-दुनूगाम गेनखेलीमे नाम केने रहए। एक बेर मदनपुरबलासभ जीतैत तँ अगिला बेर महिपुरबलाक हाथमे कप अबैत छलैक । पुरस्कारस्वरुप कप की भेटैत छलैक,विजेता टीम आ ओकर गौंवासभकेँ लगैक जेना राज भेटि गेल । ओहिगाममे कैक दिन धरि उत्सवक माहौल रहैत छल। दुनूगामक कमो पढ़ल-लिखल लोकसभ गेन खेलाइत काल आपसमे अंग्रेजी शब्दसभक उपयोग करैत जेना कतेक पढ़ल-लिखल होअए।

अजितेशक परिवार कैक पुस्त पहिने झंझारपुरसँ कोलकाता चलि गेल रहए । ओ सभ ओतए छोट-मोट काजकए गुजर करैत रहलाह । क्रमशः ओतए अपन घर बना लेलथि आ स्थायीरूपसँ कलकत्तावासी भए गेलाह । हुनकासभकेँ झुरजार बंगाली बजैत देखि केओ नहि बूझि सकैत छल जे ओ सभ बंगाली नहि मैथिल छथि । अजितेशकेँ मैथिली बूझल तँ होनि मुदा बाजि नहि सकैत छलाह । जहाँ मुँह खोलितथि कि स्वतः बंगालीमे बाजए लगैत छलाह । अजितेश खेलक सौखीन

छलाह। कोलकातामे रहनिहार मैथिल लोकनिक माध्यमसँ जखन हुनका हरि,सुरेश आ हुनकर फुटबाल टीमक बारेमे जानकारी भेटलनि तँ ओ खेलाड़ीसभकेँ बहुत प्रोत्साहन देबए लगलथि । कैकटा खेलाड़ीकेँ मीलमे नौकरी धरा देलथि । ओतहि काज करैत काल सुरेश आ हरिक आपसमे दोस्ती भेल छल । मुदा कहि नहि ककर आँखि लागल जे किछुदिनक बाद ई दोस्ती दुश्मनीमे बदलि गेल । भेलैक ई जे हरि आ सुरेश दुनूगोटे एकहि फिराकमे पड़ि गेलाह । बात ई रहैक जे अजितेशक पत्नी मोहिनी सेहो गेनखेलीक सौखीन छलि। अजितेशकेँ ई बात बहुत पसिंद रहैक। ओ अपनाभरि मोहिनीकेँ पूरा उत्साहित करथि। ततबे नहि,जखन हरि आ सुरेशसँ हुनकर संपर्क भेलनि तँ ओ प्रसन्न होइत बजलाह-

"मोहिनीकेँ गेनखेली बहुत पसिंद छनि । ओना तँ हम हुनका संगे रहिते छी,मुदा कैक बेर काज अधिक रहलापर मोसकिल भए जाइत अछि । आब ओ अहूँ सभक संगे खेल देखबाक हेतु जा सकैत छथि । एहि तरहें हम हुनकर उपरागसँ बचि सकब ।"

"जे हुकुम सरकार!" दुनूगोटे एकस्वरसँ बजलाह । अजितेश बहुत प्रसन्न भेलथि । ओ मोहिनीकेँ बजा कए हिनकासभसँ भेंट करा देलनि।

"अपन समयमे मोहिनीक पिता सेहो गेनक बहुत नीक खेलाड़ी रहथि । मोहिनी कैकबेर हुनका संगे चलि जाथि । अपन पिताक गेनखेलीमे कुदैत-फनैत देखि हुनका बहुत प्रसन्नता होनि। ओहूसँ बेसी प्रसन्नता तखन होनि जखन ओ मैच जितथि।

तहिएसँ गेनखेलीमे मोहिनीकेँ विशेष अभिरुचि भेलनि जे अखनो बनले छनि ।”

मोहिनीकेँ सेहो ई बात नीक लगलनि। ओहि समय हरि आ सुरेश युवक छलाह । देखबा-सुनबामे सेहो सुंदर छलाह। हुनकरसभक कठमस्त देह देखि मोहिनीक हाल बेहाल होबए लागल। हुनकर ध्यान खेलपर कम आ आन-आन बातपर बेसी रहए लागल ।

हरि आ सुरेश दुनूमे मोहिनीक कारण आपसी झंझट होबए लागल । कैकबेर गप्प-सप्पमे बातसँ बतंगर भए गेल । हालत ततेक तेजीसँ खराप होइत गेल जे किछुए दिनमे दोस्ती दुश्मनीमे बदलि गेल । मोहिनीके लेल से बिकट समस्या भए गेल। ककरा दिस जाए । जकरे प्रशंसा करैत दोसर तमसा जाइत ।

गाहे-बगाहे ई बात अजितेशकेँ सेहो पता लगलनि । किछुदिन तँ ओ प्रयास केलाह जे बात सलटि जाए । मुदा से भेल नहि । मोहिनी सेहो ओहिमे ओझराइत गेलि । हरि आ सुरेशमेसँ केओ पाछु हटबाक हेतु तैयार नहि रहथि । दुनूगोटे मोहिनीक लगीच अएबाक कोनो मौका नहि छोड़थि । अंततोगत्वा, अजितेश हुनका लोकनिक संगे मोहिनीक अबरजात कम करबाक प्रयासमे लागि गेलाह । ओ नीकसँ बूझि रहल छलाह जे ओ गेनखेलीक नामपर किछु आओरमे लागि जाइत छथि । मुदा तकर बादो समस्याक अंत नहि भेल,अपितु बढ़िए गेल । किछुए दिनक बाद मोहिनीकेँ संतान होनहारी भए गेलैक । संतान भेबो केलैक। किछुदिन ओ बहुत प्रसन्न रहथि । मुदा ई

समय बहुत दिन नहि रहल । अजितेशक मोनमे कहि नहि कतएसँ सक पैसि गेलनि । मोनक बात ओ मोहिनीसँ बाजिओ नहि सकैत छलाह आ बिसरिओ नहि सकैत छलाह । कैकबेर ओ किछु कहबाक प्रयासो करैत छलाह मुदा बिना कोनो प्रमाणकेँ की बेसी किछु बजबाक साहस नहि होनि । एहि मनःस्थितिसँ उबरबाक कोनो रस्ता हुनका नहि फुराइनि । ओ सदिखन किछु-किछु सोचैत रहैत छलाह । बेरा-बेरी हरि आ सुरेशक बारेमे बड़बड़ाइत छलाह । सोझा- सोझी ककरो किछु कहल नहि होनि । कहबो कोना करितथि? एहनो बात कहीं बाजल गेलैक अछि आ सेहो मात्र सकक आधारपर । ओहुना मोहिनी बंगाली परिवारक छलैक । भए सकैत अछि जे बच्चा मातृपक्षपर चलि गेल होइक । ई सभ सोचैत-सोचैत अजितेशकेँ निन्न पड़ि जानि आ जखन भोरे उठैत तँ फेर ओतहिसँ शुरु होथि। आब हुनका बात बरदास्तसँ बाहर भए रहल छलनि। जँ मोहिनीकेँ किछु कहितथिन तँ ओ बिना किछु कहने-सुनने बिदा होइत अपन नैहर दिस ।

"ई सभ एहन सातिर निकलत से स्वपनहुमे नहि सोचने रही ।"-रहि- रहि कए अजितेश मोने-मोन सोचथि ।

"मुदा आब की? जकरा जे करबाक छल से कए गेल ? जे हेबाक छल से भए गेल । आब माथ-कपार पीटिए कए की होएत? आब जँ ओ मोहिनीसँ झगड़े कए लेताह तँ की फएदा हेतनि?"-सेहो बात हुनका मोनमे अबैत रहैत छलनि ।

अजितेश आ मोहिनीक एहि संतानक नाम मधुलिका राखल गेल । ओकर मधुलिका नाम रखबामे अजितेशक कोनो

योगदान नहि छलनि । मोहिनी जे कहलखिन से ओ मानि लेने रहथि ।

किछुदिनक बाद अजितेशक बदली पटना भए गेलनि। ओ पहिने असगरे पटना अएलाह । नौकरी मे हुकुम बजेबाक रहैक छैक । तेँ जखन बदली भइए गेलनि तँ ओकरा टारब कोनो नीक बात नहि होइत ,से सोचि ओ पटना आबि गेलाह । परिवार ताबे कलकत्तेमे रहलनि । किछुदिनक बाद हुनका सरकारी डेरा भेटलनि तखन मोहिनी अपन बच्चा मधुलिकाक संगे पटना ट्रेनसँ बिदा भेलीह । कलकत्ता पटना ट्रेनमे निचला शायिकापर मोहिनी अपन नेनाक संग छलि । संयोग एहन भेलैक जे ओही डिब्बामे ऊपरका शायिकापर हरि सेहो यात्रा करैत रहथि । ओहो कलकत्तासँ पटना आबि रहल छलाह ।

रतुका ट्रेन रहैक । भोरे पटना पहुँचि जाइत छलैक । तेँ कलकत्तासँ पटना आबएबला यात्रीसभ एही ट्रेनमे चलब पसिंद करैत छलाह । मोहिनी ट्रेन खुजबासँ कनीके पहिने पहुँचल छलि। जेना-तेना अपन शायिकाधरि पहुचलि । हरि सभसँ ऊपरका शायिकापर पहिनेसँ सबार छल । भीड़मे ओकर ध्यान मोहिनीपर नहि गेलैक । कनीकालक बाद जखन ट्रेन खुजल तँ टीटी सभक टिकट मांगए लागल । हरिक टिकट ओकर झोरामे रहैक । तेँ ओकरा नीचा उतरए पड़लैक । निचुका शायिकापर मोहिनीकेँ देखि ओ आश्चर्यचकित भए गेल । मोहिनीकेँ सेहो विश्वास नहि बुझाइक जे ई केना भेलैक । खैर! जे भेलैक,से भेलैक । सभसँ पहिने ओसभ अपन टिकट टीटीकेँ देलक ।

टिकट देखि टीटी चलि गेल। तकरबाद मोहिनी आ हरिमे जे गप्प शुरु भेल से ठहरबाक नामे नहि लेलक ।

दुनूगोटेकेँ गप्प करैत-करैत एहिबातक सोहे नहि रहलनि जे एहिसँ लग-पासक यात्रीसभकेँ परेसानी होइत छनि । आखिर एकटा यात्रिकेँ नहि रहल गेलैक । ओ चिकरल -

“अहाँसभ एहिना गप्प करैत रहबै की?”

“से की?”-हरि बजलाह ।

“इहो कहबाक काज छैक? अहाँकेँ स्वयं सोचबाक चाही। ई ट्रेन छैक,कोनो अहाँक घरक ओसारा नहि अछि जे जे मोन होअए,जेना मोन होअए से करैत रही । आनो यात्रीसभक सुबिधाक ध्यान राखक चाही ।”

आओर यात्रीसभ सेहो किछु-किछु बाजए लागल । हारिकए हरि अपन ऊपरका शायिकापर चलि गेलाह । कनीके कालमे सभ फोंफ काटए लागल । डिब्बाक सभटा बल्ब मिझा देल गेल रहैक। कतहु कोनो प्रतिवादक संभावना नहि देखि हरि फेर नीचा उतरि गेलाह । मुदा एहि बेर साकंछ रहथि,बाजथि नहि।

बाहर फरीछ भए गेल छल।

“केओ फेर ने टोकारा देबए लागए ।”-से सोचि ओ फुर्तीसँ अपन शायिकापर चलि गेलाह । कनीके कालमे ट्रेन पटना जंक्सन पहुँचि गेल । यात्रीसभ उतरि रहल छलाह । मोहिनी साकंछ भए प्लेटफार्म दिस ताकि रहल छलि कि अजितेश देखि लेलखिन। ओ जोरसँ चिकरि उठलाह-

"ठहरू हम ओतहि आबि रहल छी ।"

ताबे हरि चुपचाप मोहिनीकेँ इसारा कए डिब्बाक पछिलका भागसँ प्लेटफार्मपर उतरि रहल छलाह । संयोग एहन भेलैक जे अजितेश सेहो ओमहरेसँ डिब्बामे पैसलाह आ दुनूगोटेक भेंट गेटेपर भए गेलनि । केओ किछु नहि बाजल । हरि ट्रेनसँ उतरि फुर्तीसँ प्लेटफार्मसँ बाहर भए गेलाह आ अजितेश मोहिनी दिस बढ़ि गेलाह। ओ मोहिनी लग पहुँचि किछु बाजि नहि सकलाह,मूर्तिवत ठाढ़े रहि गेलाह । हुनका एना अस्तव्यस्त देखि मोहिनी पुछलखिन-

"की भेल?"

अजितेश किछु जबाब नहि देलखिन । मोहिनीसंग ओ अपन डेरा बिदा भेलाह । रस्ताभरि अजितेश गुम्मे रहि गेलाह। एतेक दिनक बाद पत्नी पटनाक डेरापर आबि रहल छथिन । कहि नहि की-की मनोरथ मोनमे सोचने छलाह मुदा एहन संयोग भेलैक जे हुनकर अपने मोन कतहु बौआ गेलनि । मोहिनी परेसान रहथि जे आखिर हिनका की भेलनि जे एना गुम्मी धए लेने छथि? खैर! दुनूगोटे जेना-तेना डेरा पहुँचलाह ।

ओमहर हरिकेँ से डेगे नहि ससरनि । मोहिनीक पछोड़ केने-केने ओ हुनकर नवका डेरा धरि पहुँचि गेलाह।

"कम सँ कम डेरा तँ देख लेलहुँ ।"-ओ मोने-मोन सोचलथि। मोहिनीक डेरा ठिकिआ कए हरि पटना बस स्टैंड दिस बिदा भेलाह । ओ रिक्सासँ कनीके आगा बढ़ल हेताह कि डमरुक आबाज सुनेलनि । किछु आगा बढ़लापर डमरुक

आबाज आओर फरिछाइत गेल । कनीके फटकी गेलाह कि डमरु बजबैत बाबा देखेलखिन । लोकसभ चारूकातसँ हुनका घेरने छल । बाबा मगन भए डमरु बजा रहल छलाह । लोकसभ वारंबार नारा लगा रहल छल- “डमरु बाबाक जय!”

हिनका देखितहि डमरु बाबा प्रसन्न होइत बजलाह-

“हरि! ”

डमरु बाबा मुँहे अपन नाम सुनिक हरि आश्चर्य चकित रहथि। आखिर ई हमरा चिन्हलथि कोना? हम तँ कहिओ हिनकासँ भेंट नहि केने छी?

“फेर ओएह बात सभक चक्करमे पड़ि गेलह?”

औ बाबू! डमरु बाबाक मुँहे ई बातसभ सुनि कए तँ हरिकेँ हर पैसि गेलनि।

“तूँ तँ अनेरे डरा रहल छह । हमरासँ तोहर भेंट-घाँट बहुत पुरान अछि । तूँ एमहर आबह तँ।”

आब तँ हरिकेँ किछु नहि फुराइत छलनि । ओ रिक्सा छोड़ि ठामहि उतरि गेलाह । रिक्साबलाकेँ दसटा टाका देलखिन। ओ चलि गेल । हरि बाबाकेँ दंडवत भए प्रणाम केलथि। बाबा हुनका आशीर्वाद देलखिन आ अपना संगे देवनगर आश्रम लेने गेलखिन।

२

डमरु बाबा इलाकामे प्रसिद्ध छलाह । ओ सदिखन अपन बामाँहाथमे डमरु रखने रहैत छलाह । जखन ककरो आशीर्वाद देबाक होनि तँ किछु बजितथि नहि,बस डमरु बजा दितथि । तहिना जँ ककरोपर तमसइतथि तखनहु डमरु बजा दितथि । आब ई लोकपर छलैक जे पता लगाबए जे बाबा डमरु किएक बजओलाह? ओना जे सभ बाबा लग रहैत छल तकरासभकेँ सभकिछु पता रहैक जे डमरु किएक बाजल । बाबाक डमरुक स्वर बदलैत रहैत छलनि जाहिसँ ओकर अर्थ लगाओल जा सकैत छल । बाबाक बएसक अनुमान करब मोसकिल छल । केओ कहए जे ओ तीन सए वर्षक छथि तँ केओ कहथि जे पाँच सए वर्षक । सभ अपना-अपना हिसाबसँ हुनकर बएसक बारेमे अनुमान लगबैत छल । मुदा सही जानकारी ककरो नहि रहैक ने बाबा ककरो किछु कहितथि । ओ अपना बारेमे किछु कहबासँ बचैत छलाह । केओ किछु पुछितनि तँ डमरु बजा दितथि । आब लोक माने लगाबैत रहथु जे बाबा की कहलाह ? हँ कहलाह ,की नहि कहलाह । बाह रे बाबा! एकटा डमरुसँ सभकेँ नियंत्रणमे रखने छलाह ।

बाबा छलाह मनमौजी । जँ मोन होइतनि तँ घंटो लोकसभ लग रहितथि आ जँ मोन नहि भेल तँ लाख लोक चिचिआइत हुनकापर कोनो असर नहि पड़ैत छल । ओ अपन

कुटिआमे पड़ल रहितथि । देहमे एकटा मृगचर्मक लङोटी मात्र पहिरने रहैत छलाह । जाढ़ होअए वा गर्मी ओ ओहिना रहथि । सभसँ आश्चर्यक बात रहैत जे हुनका आइ धरि केओ किछु खाइत नहि देखलकनि,ने केओ सुतैत देखलकनि ।

“कहि नहि कोना जीबैत छथि?”-लोकसभ हुनका देखितहि बाजि उठैत ।

डमरु बाबाकेँ बाकसिद्ध छलनि । जे जकरा कहि देथिन से भए जाइक । डमरु बाबा त्रिकालदर्शी छलाह । ई बात इलाकामे सभकेँ बूझल रहैक । मुदा ओ जलदी किछु बजबे नहि करितथि । लोकसभ कैक दिन धरि हुनकर आश्रममे पटोटनि देने रहैत मुदा जँ बाबाकेँ बजबाक मोन नहि होनि तँ नहि बजितथि । जँ करवनो किछु बाजि दितथि तँ ओ अकाट्य सत्य होइत छल । तेँ कतेको दूरसँ लोकसभ हुनकर दर्शनक हेतु अबैत छल ।

डमरु बाबाक कैकटा आश्रम छल । बेराबेरी ओ विभिन्न आश्रम जाइत-अबैत रहैत छलाह । एकर अतिरिक्त ओ माघमेलामे प्रयाग अवश्य जाइत छलाह । आनो-आन तीर्थसभ जाइत रहैत छलाह । कोनो स्थानपर ओ बेसीदिन नहि टिकैत छलाह । हुनकर कहब रहनि जे संत/महात्मा आ नदीक जल चलैत रहए सएह नीक ।

देवनगरमे डमरु बाबाक प्रमुख आश्रम छल । जखन बाबा आएल रहथि तँ ओतए चारूकात जंगले-जंगल छल । एहन निर्जन स्थानमे डमरु बाबा धुनी रमा देलाह। हुनकर तपेक

प्रभाव छल जे दूर-दूरसँ लोकसभ कष्टक निवारणक हेतु ओहिठाम आबए लागल । बाबा जलदी ककरो किछु कहथिन नहि,मुदा जौं किछु कहि देलाह तँ ओ काज होइते छल । बाबाक यश बढ़िते गेल । एक सँ एक सेठ,अधिकारी, आ नेता हुनकासँ आशीर्वाद हेतु आबए लगलाह। भक्तसभक योगदानसँ ओतए मंदिर,धर्मशाला,पोखरि,इनार सभ बनि गेल । भक्त लोकनिक आवागमन बढ़िते गेल । तहिना ओहिठाम सुबिधासभ सेहो उपलव्ध होइत गेल । कालक्रमे ओ स्थान एकटा सभ तरहें संपन्न सहर बनि गेल । ओकर नाम देवनगर राखल गेल ।

चारूकात स्वचालित यंत्रसँ देवनगरक सभटा काज सुचारुरूपसँ चलि रहल छल। वातावरणमे अद्भुत सुगंध छल । निरंतर मंद-मंद हवा बहि रहल छल । ने गर्मी ने ठंढ़ा । एकदम वासंती हवा बहि रहल छल । लोकसभ आनंदमग्न रहैत छल । ओतए नियम-कानूनक कोनो प्रतिवंध नहि। केओ दंड पाबए बला नहि केओ दंडाधिकारी नहि। केओ-केओ कहैत छल जे स्वर्गक रस्ता देवनगर बाटे जाइत अछि । कहि नहि सत्य की छल?

३

पटना एलाक बाद अजितेश आ मोहिनीमे दिन-राति झगड़ा होइत रहैत छलनि । केओ साफ-साफ बात नहि करितथि मुदा चुप्पो नहि रहितथि । सदिखन तनावमे रहैत-रहैत अजितेश

परेसान भए गेलाह आ एकदिन अहल भोरे झोड़ा उठा कए कतहु चलि गेलाह । तकर बाद फेर घुरि कए ओतए नहि अएलाह । किछुदिन धरि तँ मोहिनी बहुत अपसिआँत रहथि मुदा मधुलिकाक भविष्यक चिंता आगु ओसभ बात दबि गेल ।

समयक चक्र आगु बढ़ल । ओ पटनेमे एकटा इसकूलमे नौकरी धए लेलनि । मोहिनी मधुलिकाक पालन-पोषण करए लगलीह। ओएह हुनकर सभकिछु रहथि । मोहिनीक छोटो-मोटो उपलब्धिसँ हुनका बहुत प्रसन्नता होनि । हुनकर जीबाक एकटा उद्देश्य बनि गेल छल मधुलिका। क्रमश: मधुलिका पैघ होइत गेलि । बएसक संगहि हुनकर सौंदर्यक सुगंध चतुर्दिक पसरि रहल छल । देखबा-सुनबामे ओ अपन माए सन छलि । ओहने गोर धप-धप,ठाढ़ नाक, गोल मुँह। जे केओ ओकरा दिस एकबेर देखैत से देखिते रहि जाइत।

अजितेशक जे किछु खोज-पुछारी संभव छलैक,से ओ केलथि । मुदा हुनकर कोनो पता नहि चललनि । जखन बहुत दिन धरि अजितेशक किछु पता नहि चलल आ घर चलाएब मोसकिल भए गेल तँ मोहिनी सरकारकेँ अनुकंपाक आधारपर नौकरी हेतु दर्खास्त देलथि । मुदा हुनकर दर्खास्त आगु नहि बढ़ि सकलनि। किछुए दिनक बाद एकटा सरकारी चिठ्ठी भेटलनि । चिठ्ठीमे लिखल छल-

“अहाँक दर्खास्तपर विचार कएल गेल । मुदा सरकारी नियमक अनुसार नहि हेबाक कारण एकरा अस्वीकृत कएल जाइत अछि।”

कोन नियम हुनकर रस्तामे आबि गेलनि से सभ किछु स्पष्ट नहि कहल गेल । ककरो-ककरोसँ पता लगलनि जे कार्यालयमे अजितेशक खिलाफ बहुत दिन धरि बिना अनुमतिकेँ अनुपस्थिति रहबाक कारण दंडात्मक कार्रवाइ चलि रहल अछि।

किछुदिनक बाद मोहिनीकेँ एकटा प्राइभेट इसकूलमे शिक्षकक काज भेटि गेलनि । काज तँ भेटि गेलनि मुदा दरमाहा बहुत कम छल । मुदा विद्यार्थीसभक संपर्कमे रहलासँ ट्युसन भेटि जाइत छलनि । कुलमिला कए गुजर जोगर ओ कमा लैत छलीह । मुदा दिन-राति व्यस्तताक कारण मधुलिकापर पर्याप्त ध्यान नहि दए पाबथि। मधुलिका अपना-आपमे लागल रहैत छलि । ओहने समयमे मधुलिकाक अभयसँ कालेजमे परिचय भेलनि । अभयक स्वभाव,बगए-बानिसभ हुनका आकर्षित केलकनि। ओ निरंतर अभयक संपर्कमे रहए लगलीह। क्रमशः हिनका दुनूक दोस्ती गहींर होइत गेल ।

४

नंदन,अंकुर आ अभय तीनूगोटे पटनामे पढ़ैत छलाह। बीच-बीचमे ओसभ गाम अबैत-जाइत रहैत छलाह । मुदा पछिला साल गर्मीमे जखन नंदन आ अंकुर गाम जाए लगलाह तँ अभय मना कए देलखिन । कहए लगलखिन-

"एहि बेर हम गाम नहि जा सकब ।"

" एहि बेर तँ गाममे आमक पथार लागल छैक । एहिठाम असगरे की करब? गाममे सभगोटे रहब तँ मोनो लागत आ भरिपोख आम सेहो खाएब।"

"बात तँ सही कहि रहल छी मुदा अखन गाम जाइओ कए हम निश्चिंत नहि रहि सकब । तेँ सोचैत छी जे पहिने काज पूरा कए ली। तकरबाद जँ समय भेटत तँ पाछुसँ हमहु आबि जाएब । ताबे अहाँसभ आगा बढ़ू ।"

"जखन अहाँ नहिए मानि रहल छी तँ उपाय की अछि? हमसभ जा रहल छी । अपन ध्यान राखब आ मौका पबितहि चलि आएब।"

"सेहो कहबाक काज । "

ई सभ गप्प-सप्प आपसमे केलाक बाद नंदन आ अंकुर टीकस लए लेलाह । ओहीदिन साँझमे ट्रेन रहैक। साँझमे जेबासँ पहिने सोचलाह जे एकबेर अभयसँ भेंट कए लैत छी । दुनूगोटे साँझमे टीसन जाइत काल अभयक डेरापर गेलाह मुदा हुनकर कोठरीमे जिञ्जिर लागल रहए । किछुकाल अभयक बाट तकलनि। मुदा ओ नहि अएलखिन तँ हारि कए नंदनआ अंकुर टीसनक हेतु बिदा भए गेलाह ।

नंदन आ अंकुर गाम बिदा तँ भए गेलाह मुदा अभय बिना हुनकरसभक डेग आगा ससरि नहि रहल छल। मुदा करितथि की ? अभय अड़ि गेल रहथिन । हुनकासभकेँ आश्चर्य लागि रहल छलनि जे अभय एहन तँ नहि रहथि । आम खेबाक उत्साह होनि वा नहि मुदा हुनकामे अपन दोस्तसभक प्रति

अनुराग जगजाहिर छल । कतेको राति गप्प करैत-करैत ओ सभ प्रात कए दैत छलाह। फेर ओ सभ सोचलथि –

"ई जीवन थिक । एहिठाम किछु चिरंतन नहि अछि । बदलैत रहब एकर स्वभाव थिक । भए सकैत अछि जे अभयकेँ किछु मजबुरी होनि ।"

बात जे होइक मुदा एतबा तँ भेलैक जे बहुत दिनका बाद छुट्टीमे ई तीनूगोटे एक संगे गाम नहि जाइत रहथि।

नंदन आ अंकुर टीसन लग पहुँच रहल छलाह । ताबते देखैत छथि जे अभय मधुलिकाक संगे सीनेमा टाकीज दिस बढ़ि रहल छथि । अभय हुनकासभकेँ देखबो केलखिन । ओहोसभ अनठा कए आगा बढ़ि गेलाह । ओसभ रिक्सासँ उतरि प्लेटफार्मपर पहुँचले छलाह कि ट्रेन खुजि रहल छल । जेना-तेना ओ सभ ट्रेनमे चढ़ि अपन-अपन सीटधरि पहुँचले हेताह कि सीटी बाजल आ ट्रेन प्लेटफार्मपर ससरए लागल ।

५

मधुलिका संगे अभयक दोस्ती कालेजमे शुरु भेल रहए। किलासमे दुनूगोटे संगे रहथि। संयोग एहन भेलैक जे ओ दुखित पड़ि गेलीह । विमारी ठीक हेबामे समय लागि गेलनि । एकसाल हुनकर पढ़ाइ छुटि गेलनि । अगिला साल फेर ओही कक्षामे प्राइभेट विद्यार्थी भए ओ परीक्षा देलनि आ सफल रहलीह। तकर

बाद बहुत दिन धरि मधुलिकासँ अभयक संपर्क नहि भेलनि। संयोगसँ एक दिन अभय सीनेमा टाकीज लग ठाढ़ रहथि । तखने खादी भंडारसँ मधुलिका बाहर होइत देखेलखिन ।

“मधुलिका! मधुलिका!”-अभय चिकरलाह ।

मुदा मधुलिका आगु बढ़ि गेलीह । ओ अंठा देलखिन कि सुनबे नहि केलखिन से नहि कहि । अभय हारि नहि मानलाह। आगा बढ़ि रस्ता छेकि कए ठाढ़ भए गेलाह ।

“की बात छैक? एतेक आबाज देलहुँ तैओ अहाँक ध्यान नहि गेल?”

“नहि सुनि सकलिऐक ।”

“की सोचि रहल छलहुँ?”

“अहींक बारेमे चर्चा भेल रहए । सएह मोन पड़ि रहल छल ।”

“मुदा एतेक दिनक बाद हमर चर्चा अहाँक घरमे भेलैक किएक?”

“सभटा बात अखने कहि देब तँ ...”

अभयकेँ एतेक दिनक बाद सामनेमे ठाढ़ देखि मधुलिकाक प्रसन्नताक अंत नहि छल । मुदा ओ अपना भावनाकेँ यथासाध्य देखार नहि होबए देलथि । कनीकाल गप्प-सप्प कए अभयक आग्रहपर दुनूगोटे लगेमे काफी हाउस गेलाह। ओतए काफी संगे दुनूगोटेक गप्प-सप्प घंटो चलैत रहल ।

काफी हाउससँ जेबासँ पूर्व दुनूगोटे अपन पता अदला-बदली केलनि । मधुलिका अभयक कानमे किछु फुसफुसेलथि आ तकर बाद आटो रिक्सा पकड़ि आगु बढ़ि गेलीह । अभय बड़ी काल धरि ओमहरे देखैत रहि गेलथि ।

एतेक दिनक बाद मधुलिकासँ भेल अकस्मात भेंट अभयकेँ रहि-रहि कए रोमांचित करैत रहल । ओ डेरा पहुँचि तँ गेलाह मुदा सौंसे रस्ता कोना बिति गेल से नहि बूझि सकलाह ।

एहि तहरें अभय आ मधुलिकाक भेंट-घँट होइत रहल मुदा नंदन आ अंकुरकेँ एहि बातसभक कोनो जानकारी नहि रहनि, ने अभय एहि विषयमे कहिओ हुनकासभसँ किछु गप्प केलाह ।

६

गाम अएलाक बाद नंदन आ अंकुर अपन-अपन घर दिस बिदा भेलाह । रस्तेमे अंकुरक भेंट अपन पितासँ भए गेलनि। हुनकर पिताकेँ गाममे लोक बंगाली डाक्टरक नामसँ जनैत छलनि । देशक विभजानक समय ओ ढाका लगक कोनो गामसँ भागि कए आएल छलाह आ मदनपुर आ महिपुरक बीचमे एकटा खोपरी बना कए सपरिवार रहैत छलाह । गाम-घरमे केओ दुखित पड़ैत तँ बंगाली डाक्टर बजाओल जइतथि । झोरामे किछु दबाइ आ सुइआ लेने साइकलपर चढ़ल बंगाली डाक्टर जहाँ साइकिलक घंटी बजबितथि तँ लोकक जानमे जान

आबि जाइत छल। हुनकर एकमात्र संतान अंकुरमे शुरुएसँ नेतागिरीक लक्षण रहैक। कालेजमे पढ़ाइपर ध्यान कम आ नेतागिरीपर बेसी रहैत छलनि। अंकुर अपन पिताक दुर्गति देखने छलाह । जेना-तेना ओ जलदी धनीक बनए चाहैत छलाह । तेँ बादमे नेतागिरीमे हुनकर अभिरुचि बढ़िते गेल ।

नंदन आ अंकुर साँझमे सुरेशसँ भेंट करए गेलथि। हुनकासभकेँ अबैत देखि सुरेश बहुत प्रसन्न भेलाह । मुदा अभयकेँ हुनकासभक संगे नहि देखि ओ बहुत चिंतामे पड़ि गेलथि। तुरंत पुछलखिन -

“अभय कतए छथि?”

“ओ एहिबेर हमरासभक संगे नहि अएलाह।”

“से किएक?”

“हमसभ तँ बहुत कहलिअनि जे संगे चलू मुदा ओ मना कए देलथि।”

“हम तँ बाट तकैत रही जे अएताह तँ हुनकर बिआह तय कए देबनि। घटकसभ बहुत पछोर कए रहल छथि।”

“तकर काज नहि पड़त ।”

“से की?”

“समय संगे अपने बूझि जेबैक ।”

सुरेशक कान ठाढ़ भेलनि ।

“हौ! बात की छैक? परिछा कए कहह ने ।”

“कहिए कए की होएत? आओर दुखी भए जाएब? ”

"आ नहि कहबह तँ की समस्याक समाधान होएत?"

नंदनकेँ सुरेशसँ घोंघाउज करैत देखि अंकुरकेँ नहि रहल गेलनि। ओ बीचेमे बाजि उठलाह-

"ई संकोचवश नहि कहि रहल छथि ।"

सुरेश नंदनकेँ कातमे लए गेलाह । दुनूगोटेमे बहुत काल धरि एकांती होइत रहलनि । थोड़कालक बाद अंकुरके सेहो ओतहि बजा लेलखिन । नंदनआ अंकुर नहि सोचने रहथि जे सुरेश हिनकरसभक बातकेँ एतेक गंभीरतासँ लेताह । मुदा ओ तँ बहुत चिंतित भए गेलथि । तकर बाादे ओ निर्णय केलाह जे अभयक बिआह शीघ्रे तय करब ठीक होएत ।

"समय-साल ठीक नहि अछि । की पता कतहु किछु कइए लेथि? तखन?"- सुरेश मोने-मोन सोचथि।

सुरेश चिंतामे पड़ि गेलाह । ओना कथासभ तँ अबैत रहैत छलनि,चर्चो होइक । अभयकेँ फोटो-परिचयसभ पठाओल जानि। मुदा बात ओतहि ठमकि जाइत छल ।

"कथी लेल अगुताइ छी । नौकरी पकड़ए दिअ ने, एक सँ एक कथा आओत ।"-अभय कहितथि ।

"से तँ बात उचिते । मुदा नीक कथासभ हाथसँ निकलि जाएब ठीक नहि ।"

एहि तरहें पिता-पुत्रमे संबाद होइत रहलनि। मुदा सुरेशकेँ आब रहल नहि होनि। ओ अभयकेँ समाद दए गाम बजओलथि जाहिसँ निर्णय लेल जा सकए । अभय गाम अएबो केलाह । तकर बादो हुनकर बातमे कोनो स्पष्टता नहि बुझाइन।

सुरेशकेँ आब नहि रहल गेलनि । ओ अभयक बिआह गामे लग एकटा पूर्व परिचित परिवारमे ठीक कए देलनि । बिआहक दिन सेहो तय कए देलनि । जतए जे भेटलनि तकरा हकारो दए देलखिन। आब तँ विचित्र दृश्य उतपन्न भए गेल । जे जेम्हरे भेटनि सएह अभयकेँ बिआहक चर्च कए दैत छलनि। अपना मोने तँ ओ सभ शुभेक्षा प्रकट करैत छलाह मुदा अभयकेँ लागनि जेना जरलपर नून छीटि रहल अछि । बेरि-बेरि भए रहल एहि तरहक घटनासँ ओ तंग भए गेलाह । अंततोगत्वा, ओ पिताक बात मानि लेलखिन । तकरबाद तँ सुरेशक प्रसन्नताक अंते नहि छल । बिआहक दिन तय भए गेल । कुटुम्ब लोकनिकेँ नोत-हकार देलखिन । बिआहक बिधि-व्यवहारक हेतु चीज-वस्तुसभक ओरिआन केलाह । देखिते-देखिते परिवारक माहौले बदलि गेल ।

७

एहिबेर आम बहुत फरल छलैक । छुट्टीमे गाम अएलाक बाद नंदन आ अंकुर बेसीकाल कलमेमे रहैत छलाह । रातिओ कए कैक बेर ओतहि रहि जाइत छलाह । एहिना एक बेर दूपहर रातिमे कलममे मचानपर सुतल नंदनकेँ कतहु फटकीसँ टार्चक फोकसीन देखएमे आएल । नंदनक संगे अंकुर सेहो आमक रखबारी करए आएल रहथि । अंकुरकेँ तुरंत निन्न पड़ि गेलनि ।

मुदा नंदन कतबो प्रयत्न करथि निन्न नहि होनि । तकर फएदा सेहो भेलनि । रहि-रहि कए गोपीभोग गाछसँ गच्छपक्क आमसभ तुबैत छल । गोपीभोग गाछ रहनि अंकुरक हिस्सामे। तेँ जाबे ओ जागल रहलाह ताबे तँ नंदन किछु नहि कए सकलाह । आब जखन अंकुर सुति रहलाह तँ हुनका मौका भेटलनि । एकाधटा गोपीभोग आम हाथो लगलनि । आओर आम खसत,ताहि लोभमे हुनका निन्न हेबे नहि करनि,हेबो कोना करितनि? गोपीभोग आमक हेतु नेनेसँ ओएह नहि गामक सभ धीयापूता धपाइत रहल अछि। कहुना कए एकहुटा गोपीभोग जँ हाथ लागि गेल तँ बुझू जय-जय भए गेल ।

थोड़ेकालक बाद नंदनकेँ बाधमे टार्चक फोकसीन देखेलनि । फोकसीन क्रमशः लगीच अबैत गेल । आब ओ स्पष्ट देखि रहल छलाह जे टार्चक पाछा-पाछा एक सोड़हि लोकसभ चलि रहल अछि । थोड़बे कालमे ओकरसभक आपसी गप्प-सप्प सेहो सुनाइत छल । नंदन बहुत डरा गेलाह । जान बचेबाक हेतु मचानपर पड़ि रहलाह । नंदन कैक बेर अंकुरकेँ कुबिआबथि मुदा ओ उठबे नहि करनि ।

कलमसँ सटले एकपेरिआ रस्ता छलैक । ओ सभ चौबटिआपर जीप ठाढ़ कए देलक आ टार्चक फोकसीन दैत पैरे-पैरे बिदा भेल । नंदन चुप-चाप सभटा देखैत रहलाह । कैकगोटा बंदूक लटकओने छल । ओ सभ आपसमे गप्प कए रहल छल-

“आइ सुरेशक हिसाब चुकता करबाक अछि । परिणाम चाहे जे होइक ।” - एकगोटे बाजल ।

"जँ किछु गड़बड़ केलक तँ आइ ओकरा घरहंज कए देबैक -दोसर बाजल ।

“ओकर एक्केटा पुत्र छैक । ओकरा उठा लिअ । सभटा काज अपने भए जाएत । आओर किछु करबाक काज नहि अछि।” -तेसर बाजल ।

ई सभ बजैत ओ सभ आगा बढ़ि गेल । ओकरासभकेँ आगा बढ़ि गेलाक बाद नंदनकेँ जानमे जान अएलनि । जाधरि ओ सभ अदृश्य नहि भए गेल नंदन अंठेने पड़ल रहथि । तकरबाद ओ मचानपर उठि कए बैसि गेलाह आ अंकुरकेँ उठओलथि-

“अंकुर! अंकुर! ”

“हमरा बहुत निन्न लागल अछि । तंग नहि करू ।”

“कहैत छी जे जलदी उठू से बुझिए नहि रहल छी ।”

“की भेलैक?”

“बहुत गड़बड़ समाचार अछि ।”- से कहि नंदन अंकुरकेँ जोरसँ हिला देलखिन । अंकुर कहुना कए उठलाह । औंघीसँ आँखि खोलल नहि होनि । ओ उठिकए बैसले रहथि कि जोरसँ आबाज भेल।

“ठांइ! ठांइ!”

“की भेलैक?”- अंकुर पुछैत छथि।

“लग-पासमे गोली चलल अछि ।” - नंदन कहलखिन।

“हमरो सएह बूझा रहल अछि ।”

“किछुकाल पहिने ईसभ गामदिस जा रहल छल । तकरेसभक काज बूझा रहल अछि ।”

“मुदा एतेक रातिमे गोली चलेबाक की कारण भए सकैत अछि?”

“पहिने जान बचाउ, फेर एहि बातसभपर चर्चा करब ।”

तकरबाद दुनू गोटे इएह-ले ओएह-ले मचान छोड़ि कए भगलाह। ओसभ कनीके फटकी गेल हेताह कि गोपीभोग गाछसँ आम खसबाक आबाज भेल -

“धप्प!”

अंकुर दुबिधामे पड़ि गेलाह । सामनेमे गोपीभोग आम खसल छल।

“एहन सुंदर गछपक्कू आमकेँ कोना छोड़ल जाए?” -से सोचि ओ ठमकि गेलाह । नंदन आगु बढ़ैत गेलथि ।

थोड़बे कालमे गामसँ सटल धर्मशाला लग पहुँचि गेलाह। पाछु मुड़ि कए देखैत छथि तँ अंकुर नदारद ।

८

सुरेश गामक प्रतिष्ठित व्यक्ति छलाह । दस-बीस आदमी सदरिकाल हुनका ओहिठाम बैसले रहैत छल । फेर ओहि दिन तँ हुनका ओतए हुनकर पुत्र अभयक बिआहक हेतु

बहुतरास कुटुंब,गौंआ-घरुआसभ जमा भेल रहथि । कन्यापक्षक लोकसभ सेहो दिनमे आएल रहथि । काल्हि बिआह होइतैक । ई बात इलाकामे पसरि गेल रहैक ।

रातिमे गीत-नाद भेलैक । भोज-भात भेलैक । गप्प-सप्प तँ होइते रहलैक । क्रमशः लोकसभ सुतए चलि गेलाह । एकाध गोटे तैओ जागले रहथि । काल्हि कोना की होएत तकर कार्यक्रम बनबएमे सुरेश व्यस्त रहथि। कतेक बरिआती जाएत,के-के नहि आबि सकलाह,व्यवस्था केना की अछि ,एही विषयसभपर चर्चा करैत रहथि । एतबेमे दरबाजापर भयानक विस्फोट भेल । चारूकात धुँआ पसरि गेलैक। देखिते-देखिते दरबाजा आ आङनकेँ नकाबपोश लोकसभ चारूकातसँ घेरि लेलक ।

“खबरदार! केओ अपन स्थानसँ एमहर-ओमहर नहि होइ अन्यथा मारल जाएब ।”- नकाबपोशसभक सरदार बाजल। एतबहिमे गोली चलेबाक आबाज भेल । किछु नकाबपोशसभ आङनमे पैसि गेल । किछुगोटे अभयकेँ घरसँ बाहर अनलक। अभयकेँ किछु कहबाक,बजबाक कोनो अवसर नहि भेटलैक । चार-पाँचटा युवक हुनका उठओलक आ दरबाजापर घिचने चलि गेल । दरबाजापर चारूकात धुँआ भरल छल। ताबतेमे एकटा जीप पाछुसँ आएल । अभयकेँ जीपपर लादि नकाबपोशसभ जीपपर सबार भए हवाइ फायरिंग करैत आगु बढ़ि गेल । शेष युवक सभ सेहो इएह-ले ओएह-ले घसकल। सुरेश आ हुनकर परिवारक लोकसभ किछु बुझितथि ताहिसँ पहिने खेल खतम छल ।

क्रमशः धुँआ छटल । आङनसँ केओ चिकरल-

"दौड़ैत जाउ औ गौंवासभ ।"

"की भेल? "

"जुलुम भए गेल । नकाबपोशसभ अभयकेँ लेने चलि गेलनि ।"

दूपहर रातिमे बेरा-बेरीसभ टाहि दए रहल छल। थोड़बे कालमे दरबाजापर लोकसभक करमान लागि गेल। आश्चर्यक बात रहैक जे नकाबपोशसभ घरक कोनो चीज-वस्तु नहि लए गेल रहए। सभटा गहना-टाका ठामहि छल।

९

एहि घटनाक चर्चा गाममे रातिभरि होइत रहल । लोकसभकेँ कोनो अनुमान नहि लागि सकलैक जे आखिर एना भेलैक किएक ? भए सकैत अछि जे सुरेशकेँ किछु बूझल होनि आ संकोचवश किंवा कोनो आओर कारणसँ ककरो नहि कहि रहल होथि । बात जे होइक मुदा गामक लोक छगुंतामे पड़ि गेल रहए जे हुनका सन कलामी आदमीक पुत्रकेँ नकाबपोशसभ लेने चलि गेल आ ओ किछु नहि कए सकलाह । सभ एतबे कहथि जे समय बलवान होइत अछि। केओ पैघ छोट नहि होइत अछि।

एहि घटनासँ सुरेशक संपूर्ण परिवारमे हाहाकार मचि गेल। लोकसभ आबए,जाए मुदा समाधान ककरो नहि फुराइक। केओ कइए की सकैत छल? सभ बाट तकैत रहए जे भोर होइक तखन किछु कएल जाएत ।

आखिर भोर भेलैक । सुरेश पोखरि दिससँ आबि कए दरबाजापर चौकीपर बैसल रहथि । गामक किछुगोटे सहानुभूति देखबैत रातिभरि हुनका ओहिठाम रहि गेलथि । भोर होइते ई बातसभ चारूकात पसरि गेल। लग-पासक गामसँ लोकसभक करमान लागि गेल । सभक मोनमे एकहिटा प्रश्न छल-आखिर एना भेलैक किएक? मुदा सुरेश ककरो किछु नहि कहथि , चुपचाप बैसल रहथि । ओमहर आङनमे हुनकर पत्नीसे पेटकुनिआ देने रहथिन । दाइ-माइसभ हुनका बोल-भरोस देथि मुदा कहबी छैक जे गुड़क मारि धोकरे जनैत अछि । जकरा भितरिआ कष्ट भए गेलैक अछि तकरा गप्प-सप्पसँ की होइतैक। फेर चीज-वस्तुक बात रहितैक तँ सहिओ जइतथि। मुदा एहिठाम तँ हुनकरसभक एकमात्र संतानक जिनगी दावपर लागि गेल छल । मुदा कएल की जाए?

दरबाजापर सभ गुनधुनमे रहए । ककरो किछु नहि फुराइक । ओही समयमे ककरो ध्यान दरबाजाक उतरबरिआ कोनमे खसल लिफाफापर गेलैक । लिफाफा खोलल गेल । ओहिमेसँ लाल अक्षरमे लिखल एकटा चिठ्ठी निकलल । सुरेश चिठ्ठी पढ़ए लगलाह-

“खबरदार!

एहि चिट्ठीकेँ नीकसँ पढ़ि लएह । जँ पुत्रक जिनगीसँ कनिको मोह होअए तँ काल्हि होबए बला एकर बिआहक प्रस्तावकेँ बिसरि जाह । एकर बिआह पहिनहिसँ तय अछि । जौं किछु अनट केलह,थाना-पुलिसक चक्करमे पड़लह तँ तकर परिणाम भोगबाक हेतु तैयार रहिअह । एकटा बात नीकसँ बूझि लएह । हमरासभकेँ कोनो लोभ-लालच नहि अछि ने हमरा तोरासँ कोनो व्यक्तिगत शत्रुता अछि । हमसभ सामाजिक कार्यकर्त्ता छी,समाजक उत्थानमे लागल छी । समाजमे भए रहल अन्यायक प्रतिकार करबाक प्रयासमे लागल छी । उचित काजक हेतु किछु कए सकैत छी । तेँ सोच-विचारि कए काज करिअह ।"

यद्यपि नकाबपोश अपहरणकर्तासभ चिठ्ठी लिखि सुरेशकेँ डरा देने रहनि मुदा ओ चुप नहि बैसलाह । ओ भोर होइतहि गौंवासभक संगे थाना पहुँचलाह । अभयक अपहरणसँ उद्वेलित सुरेश आ हुनकर गौंवासभ थानामे रहि-रहि कए नारेबाजी कए रहल छल । पुलिस गौंवासभसँ तरह-तरहक सबाल-जबाब कए रहल छल । ओकरासभकेँ गौंवेपर सक होइत छलैक । थानेदार गौंवासभसँ गप्प करबाक चेष्टा केलक। मुदा से संभव नहि होइक कारण लोकसभ झुंड बनाकए थानेदारक पछोर करए लागल आ बीच-बीचमे नारेबाजी सेहो करैत छल । अंततोगत्वा, थानेदारक आदेशपर पुलिस लाठी भाँजए लागल । लोकसभ इएह-ले ओएह-ले भागल । रहि गेलाह सुरेश असगरे । हुनको दरोगाजी त्वरित कार्रवाइक आश्वासन दए बिदा कए देलकनि ।

अभयकेँ लदने नकाबपोशसभ जीपमे आगा बढ़ल । ओहि जीपकेँ गामसँ निकलिते एकटा दोसर जीप आएल । नकाबपोशसभ ओहि जीपमे सबार भए अगिला जीपक पाछा-पाछा बिदा भेल। संयोग एहन भेलैक जे अंकुर दुनू जीपक सामने पड़ि गेलाह । अगिला जीपमे बैसल अभय हुनका देखितहि चिचिआ उठल ।

“बचाउ! बचाउ!”

अंकुरक ध्यान ओमहर गेलैक ।

“ई तँ अभयक आबाज बुझा रहल अछि।” ओ मोने-मोन सोचलथि। एहिसँ पहिने की ओ किछु करितथि पछिला जीपसँ तीन-चारिटा नकाबपोश फानल आ अंकुरकेँ लेने-देने जीपमे ठुसि देलक । दुनू जीप तेजीसँ आगा बढ़ि गेल। जीपमे अंकुर जोर-सोरसँ चिकरए लागल । ततबे नहि ओ लग-पासमे बैसल नकाबपोशसभक संग मारि-पीट करए लागल । देखिते-देखिते जीपमे युद्धक माहौल बनि गेल । नकाबपोशसभक प्राण अवग्रहमे पड़ि गेलैक । ओसभ तमसा कए अंकुरकेँ चलैत जीपसँ धकलि देलक । नकाबपोशसभ जीपकेँ तेजीसँ चलबैत थोड़बे कालमे निपत्ता भए गेल ।

लगीचेमे धर्मशालापर बैसल नंदन सभकिछु देखि रहल छल । मुदा ओकरा बकोर लागि गेलैक । चाहए जे जोरसँ चिकरी, मुदा किछु बाजले नहि होइक । लोकसभकेँ इसारा करए

मुदा किछु कहले नहि होइक, मुँहसँ आबाज फुटबे नहि करैक । कनी कालमे किछु-किछु आबाज निकललैक। ताबे तँ जीपपर सबार बदमाससभ निपत्ता भए गेल छल । नंदन अंकुर लग पहुँचल । तेज चलैत जीपसँ खसलासँ ओकरा बहुत चोट लागल छलैक। रच्छ भेल जे नंदन समयपर ओकरा अस्पताल पहुँचा देलक । डाक्टरसभक तत्परतासँ ओकर जान बाँचि गेल।

एहि घटनाक बाद अंकुर गामेमे रहि समाज सेवामे लागि गेल । करवनो दिल्ली,करवनो पटना अबैत-जाइत रहल । लोकसभक छोट-मोट काजो करा दैत छल । खादीक उज्जर धप-धप धोती-कुर्ता आ गांधी टोपी सदिखन तेयारे रहैत छलैक। जखने मौका होइक ओ रिक्सापर चढ़ैत आ सहर दिस बिदा भए जाइत । कहिओ कोनो मिटिंग,कहिओ किछु । कालक्रममे ओकर प्रभाव बढ़िते गेल आ ओ बेसीकाल पटनेमे डेरा देने रहैत छल । लोकसभ ओकरा नेताजी कहए लगलैक ।

नंदनक माता-पिता नेन्नेमे मरि गेल रहथि । मामासभ नेनेसँ ओकर पालन-पोषण केलथि । ओ थोड़ बहुत पढ़ाइ सेहो केलथि । बादमे मामागामेमे लटगेनाक दोकान खोलि लेलनि। मुदा दोकान चलल नहि । सभटा उधारिएमे चलि जाइत छल । मामागामक बात रहैक । ककरो मनो नहि कए पाबथि । आखिर ओ दोकान बंद भए गेल। तकरबाद ओ नेताजीक आगा-पाछा करैत रहैत छल जाहिसँ ओकरा छोट-मोट ठीकेदारी भेटि जाइक। कहिओ काल ओ नेताजीक संगे पटना सेहो चलि जाइत छल ।

११

अभयकेँ जीपमे पैसिते बदमाससभ आँखिपर पट्टी बान्हि देलकनि , हाथ-पैर बान्हि देलकनि । तकर थोड़बे कालक बाद हुनका किछु ध्यान नहि रहलनि। नकाबपोशसभ हुनका लेने-देने कोनो अज्ञात स्थानमे पहुँचि गेल । दोसरदिन दुपहरिआमे जखन हुनका निन्न टुटलनि तँ ओ एकटा कोठरीमे बंद रहथि । बाहर नकाबपोशसभ पहरा दए रहल छल । बाहरी गेटक बनाबट तेहन छल जे लग-पाससँ जाइत-अबैत लोककेँ किछु पता नहि चलैक ।ओतए रखबारसभ सदिखन हिनकापर नजरि राखि रहल छल । ओहीमेसँ केओ हुनका जलखै आ चाहो आनि कए देलकनि। मुदा ओ किछु नहि खेलाह,चाहो नहि पीलाह।

“एना कतेक दिन चलबह । जै कहैत छिअह से करैत चलह, नहि तँ अरड़ी खेतमे प्राण जेतह से बूझि लएह ।”

“मुदा तूँ सेभ के छह आ हमरा एहिठाम किएक अनलह अछि?”

“अगुता नहि । सभ बात अपने पता चलि जेतह ।”

जलखै आ चाह हुनका आगुमे फेर राखि देल गेल । एहि बेर ओ बिना कोना ना-नुकुरकेँ खा गेलाह । चाहो पीलाह। पेटमे अन्न गेलाक बाद मोन कनेक शांत भेलनि । ओ देबालपर औंगठि गेलाह।

अभयकेँ ओहिठाम रहैत तीन दिन बिति गेल । समयक संगे ओ ओहिठामक वातावरणसँ अभ्यस्त भए रहल छलाह। ओ आस्वस्त भए गेल रहथि जे कम सँ कम जानपर कोनो खतरा नहि अछि । आब हुनका ओतेक भय नहि लागि रहल छलनि ,ने ओ कोनो एहन किछु करथि जाहिसँ कोनो प्रकारक परेसानी होइतनि । मुदा गाम-घरसँ फटकी एहि हालमे रहए पड़तनि से कहिओ नहि सोचने रहथि । ताहि परसँ इहो नहि बुझाइनि जे ओहिठामसँ कोना आ कहिआ छुटताह? हुनका एहिठाम किएक आनल गेल आ आगा ओ की करताह? एहिबातसभक असमंजस एक प्रकारक असमर्थताक परिचायक छल। ने अपना मोने ओतए आएल रहथि,ने अपना मोने ओतएसँ जा सकैत छलाह । जँ बेसी किछु करताह तँ झंझटमे पड़ि सकैत छलाह,परेसानी बढ़ि सकैत छलनि। ई बात ओ नीकसँ बूझि रहल छलाह । तेँ ओ चुप रहि उचित समयक प्रतीक्षा कए रहल छलाह। अपन मर्जीक जखन किछु कइए नहि सकैत छी तखन तँ जे भए रहल अछि तकरा स्वीकार केनहि नीक।

१२

पिताक आग्रहपर गाम जाइत काल अभय मधुलिकासँ भेंट नहि कए सकल रहथि । एहि बातसँ मधुलिका बहुत दुखी छलि । अभय एना एकाएक गाम चलि जेताह आ हुनका लोकनिक आपसी संबंधमे अचानक बिरड़ो उठि जाएत से ओ

नहि सोचि सकल रहथि। एहि घटनाक्रमसँ ओ बहुत उदास रहथि। बुझेबे नहि करनि जे आब की कएल जाए? एहने समयमे एकदिन हुनकर भेंट प्रगतिपथक अध्यक्ष रविकान्तसँ भेलनि ।

"किएक नहि हमहु प्रगतिपथमे सामिल भए जाइ?"

ओ रविकान्तकेँ अपन मोनक बात कहलखिन ।

"मुदा अहाँ एहिसभमे किएक पड़ि रहल छी?"

"मोन नहि लागि रहल अछि ।"

"से किएक?"

मधुलिका किछु उत्तर नहि दए सकलीह ।

"सभटा गलती अभयक छैक ।" - रबिकान्त बाजल ।

"ओकर कोन गलती छैक?"

"गलती छैक कोना नहि? ओ पढ़ल-लिखल लोक अछि। अपन स्वतंत्र निर्णय लेबाक चाही । ओकरा अपन निर्णयपर अड़बाक छल । मुदा ओ परिवारक दबाबमे आबि कए बदलि गेल ,अहाँक संग धोखा केलक । ई तँ नीक बात नहि भेलैक ।"

"तखन अहीं कहू जे की कएल जाए?"

"हमरा विचारसँ अहाँ महादेव स्थान चलू। हमसभ सेहो ओतहि आबि जाएब । ओतहि अगिला कार्यक्रम बनाओल जाएत ।"

महादेव स्थान जेबासँ पूर्ब मधुलिकाकेँ अभयसँ भेंट करबाक इच्छा रहनि । हुनका ई तँ पता रहनि जे अभय एतहि कतहु छथि मुदा हुनकर असली ठेकाना तँ रविकान्तेकेँ बूझल

रहनि । रविकान्त अपना भरि अभयकैं मधुलिका सँ गप्प-सप्प करबाक हेतु कैक बेर कहने रहथिन मुदा ओ किछु बाजथि नहि। संभवतः हुनका मोनमे बहुत रास बितलाहा बातसभ घुमि रहल छलनि । जाहि तरहें हुनका बलातपूर्वक गामसँ ओसभ उठा अनने रहथि ताहि बातसँ हुनका मोनमे बहुत क्षोभ रहनि । मुदा डरे किछु बाजथि नहि । आखिर रविकान्त मधुलिकाकैं अभयक ठेकानापर पहुँचा देलखिन आ अपने हटि गेलाह । मधुलिकाकैं अपना लग देखि अभयकैं बहुत आश्चर्य भेलैक । ओ करवनहु नहि सोचने छलाह जे मधुलिका ओतहु आबि सकैत छथि । कनी काल तँ दुनू गोटे चुप्पे रहथि । एक-दोसर दिस देखथि जरूर मुदा किछु बाजथि नहि । हारि कए मधुलिके आगु भेलीह-

“अहाँ एना चुप्प किएक छी?”

अभय इसारा केलखिन । फटकी केओ हिनका दुनूगोटेपर नजरि रखने छल । अभयकैं सक छलनि जे ओ हिनके पाछु पड़ल अछि ।

“ओकरासँ डरेबाक कोनो काज नहि छैक । एतेक दिनपर अहाँ भेटलहुँ । सोचने रही जे भरि पेट गप्प करब।”

“आब गप्प करबाक हेतु रहिए की गेल अछि?”

“से किएक?”

“अहाँ तँ एना बाजि रहल छी जेना किछु बूझले नहि होअए।”

“हमरा की बूझल रहत? हम तँ कहिआसँ अहाँक बाट ताकि रहल छी ।”

“ई कोनो बाट ताकब भेलैक? चारूकात पहरा लागल अछि । बदमाससभ जबरदस्ती हमरा एतए उठा अनलक अछि । अहीं कहू जे एहन हालतमे केओ केना प्रसन्न रहि सकैत अछि?”

“जाए दिअ । जे भेलैक, से भेलैक । बितलाहा बातसभकेँ पकड़ि कए जिनगी थोड़े चलि सकैत अछि?”

“मुदा जोर-जबरदस्तीसँ तँ जिनगी बँचिओ नहि सकैत अछि, चलबाक गप्प तँ छोड़ू।”

की भेल, की नहि मुदा मधुलिका आ अभयक गप्प-सप्प देखिते-देखिते कलहपूर्ण भए गेल । अभय तामसमे अड़बड़ बजैत मधुलिका दिस दौड़लाह कि पाछुसँ रविकान्त अभयकेँ पकड़ि लेलथि । अभय बड़बड़ाइत रहलाह । रविकान्त तमसाइत रहल । मुदा केओ ककरो बात मानबाक हेतु तैयार नहि भेल । हारि कए अभयकेँ दोबारा कोठरीमे बंद कए देल गेलनि।

“अहाँ चिंता नहि करू ।”-रविकान्त मधुलिकाकेँ कहलक।

“चिंता की करब? मुदा एहन झंझटमे पड़ि जाएब से नहि सोचने रही।”

“सभ ठीक भए जेतैक । अहाँ महादेव स्थान चलिए रहल छी । ओतहि एहि समस्याक समाधान भए जाएत । केहन-केहनकेँ हमसभ लाइनपर अनलहुँ । एकर की औकात छैक?”

रविकान्त किछु-किछु बड़बड़ाइत रहल । हुनका एना देखि मधुलिका चिंतित रहथि ।

“एहि तरहें रविकान्त कोना आबि गेलाह? की ओ हमरा लोकनिक बात सुनि रहल छलाह? मधुलिकाक मोनमे ई बातसभ घुमि रहल छल । हुनका गुम्म-सुम्म देखि आखिर रविकान्तकेँ नहि रहल गेलनि । ओ कहैत छथि-

“की बात छैक? अहाँ बहुत परेसान लागि रहल छी? ”

“हम ई बात नहि बूझि रहल छी जे अहाँ हमरा लोकनिक बीच भए रहल गप्प-सप्पक बीचमे कोना आबि गेलहुँ?”

एहिबात पर रविकान्त ठठा कए हँसि पड़लाह ।

“ई समाज ओहिना सुधरए बला नहि अछि । एतए ओकरे बात सुनल जाइत अछि जकरा हाथमे लाठी अछि । अस्तु, हमहुसभ सभ तरहें तैयारी केने रहैत छी ।”

“से की?”

“अखन एहि बातसभकेँ छोड़ू। अहाँ हमर कार्यकर्त्तासभक संगे आगु चलू । पाछुसँ हमहु आबि रहल छी।”

मधुलिका किछु नहि बजलीह । हुनका गुम्म देखि रविकान्त बजलथि-

“अहाँ चिंता नहि करू । हम सदति अहाँक संगे छी आ रहब ।”

१३

प्रगतिपथक कार्यकर्त्तासभ मधुलिकाकेँ लेने महादेव स्थान पहुँचि गेल । साँझमे किछु आओर कार्यकर्त्तासभ जीपसँ पहुँचल । अभय सेहो ओकरासभक संगे रहथि । सामिआना लागल रहए। चारूकात गहमा-गहमी छल । लग-पासमे लोकसभकेँ हकार सेहो देल गेल छल । केओ आबि रहल छल,केओ जा रहल छल । रसनचौकी बाजि रहल छल ।

अभयकेँ बुझेबे नहि करनि जे आखिर बात की छैक? एहि बातक तँ कतहुसँ अनुमान नहि रहनि जे किछु कालक बाद ओ बिआह कए रहल हेताह । मुदा ओहो समय आबिए गेल। चार-पाँचगोटे हुनका एकटा कोठरीमे लए गेल । हुनका सुंदर-सुंदर परिधान पहिरा देल गेल आ पाछुक रस्तासँ आङनमे आनल गेल । ओहिठामसँ परिछनक बिधि प्रारंभ भेल । मधुलिकाकेँ खूब नीकसँ सजा-धजा कए आङनमे आनल गेल । पंडितजी बिआहक मंत्रसभ धराधर पढ़ा रहल छलाह । सिंदुरदानक व्यवस्थामे पंडितजी लागल छलाह कि एतबेमे किछुगोटे लाठी-भाला लेने ओतए पहुँचल । ओकरासभक संगे अभयक पिता सुरेश सेहो रहथि। ओकरासभकेँ कोना-ने-कोना अभयक बिआह जबरदस्ती करेबाक सूचना भेटि गेल छल।

“एहनो कहीं भेलैक अछि? जकर बेटाक बिआह हेबाक छैक तकरा पतो नहि, ओकर कोनो कुटुंबकेँ पता नहि,गौंवा-घरुआकेँ कोनो जानकारी नहि आ एमहर गीत-नाद भए रहल

अछि। बिआहक बिधि भए रहल अछि।ई तँ हद भए गेल ।"- सुरेश बजलाह ।

"जखन अहाँ जबरदस्ती कए सकैत छी तँ हमसभ किएक नहि कए सकैत छी?"- रविकांत बाजल ।

"ई कोनो बात भेलैक? हमर ओ संतान अछि । हम ओकर जीवनदाता थिकहुँ । अपन संपूर्ण शक्तिसँ ओकर लालन-पालन केलहुँ अछि । तखन ओकर बिआह के करत? "

"जे हेबाक छल से भए गेल । आब घोंघाउज केलासँ की फएदा?"

"एहनो कहीं भेलैक अछि।" एतेक बाजि कए ओ हाक देलखिन-

"कहाँ गेलह रामू, मंगला, दीनू.... ।"

ओ सभ लाठी भजैत अङना दिस बढ़ल ।

ताबतेमे प्रगतिपथक कार्यकर्त्तासभ सेहो चारूकातसँ पहुँचि गेल। सभसँ पहिने सुरेशक गट्टा पकड़लक आ हुनका एकटा कोठरीमे बंद कए देलक । सुरेशक समर्थकसभ एकर बिरोध करबाक प्रयास केलक । शुरुमे तँ प्रगतिपथक कार्यकर्त्तासभ ओकरासभकेँ बुझेबाक प्रयास केलक मुदा ओ सभ अंट-संट बजैत रहि गेल । संख्याबलमे प्रगतिपथबलासभ बेसी नहि रहए। मुदा ओकरासभक हाथमे घातक हथिआर रहैक। ताबतेमे केओ हवाइ गोली चला देलक । सुरेशक समर्थकसभ सहमि गेल । किछु फुरेबे नहि करैक जे केमहर जाए,की करए? रविकान्तक समर्थकसभ सुरेशक समर्थककेँ

चारूकातसँ घेरि लेलक । किछुगोटे ओकरासभपर घातक प्रहार करहि जा रहल छल कि रविकान्त चिकरि उठल-

"खबरदार! जतबे कहल जाइत छह ततबे करह । सुरेशकेँ घरमे बंद कर । अखन आओर किछु करबाक काज नहि अछि।" रविकान्तक इसारा बूझि ओकर समर्थकसभ सुरेशक समर्थकसभकेँ दोसर कोठरीमे बंद कए देलक ।

देखिते-देखिते चारूकात अफरा-तफरीक माहौल भए गेल । ककरो किछु फुड़ेबे नहि करैक । एहि घटनाक समाचार बिजलौका जकाँ चारूकात पसरि गेल ।

"किछु पता लगलह?"

"की बात?"

"सुरेशकेँ रविकान्तक समर्थकसभ बंदी बना लेलक अछि ।"

"से केना भेलैक ?"

"एतेक गप्प करबाक समय नहि अछि । ओहिठामसँ केओ समाद लए कए आएल अछि । सभगोटेकेँ मदतिमे चलबाक अछि ।"

सुरेशक गौंवासभ आपसमे गप्प-सप्प कए रहल छलाह। थोड़बेकालमे सौंसे गामक लोक सुरेशक समर्थनमे लाठी-भाला-गड़ाँस लेने ओतए पहुँचि गेल । रविकान्तक समर्थकसभपर ओसभ भारी पड़ि रहल छल । सभसँ पहिने ओसभ सुरेश आ ओकर समर्थकसभकेँ घरसँ बाहर करबामे लागि गेल । मौकाक फएदा उठबैत रविकान्त आ ओकर समर्थकसभ अभय आ

मधुलिकाकेँ लए भगलाह । थोड़बेकालक बाद सुरेश आ ओकर समर्थक लठैतसभ बाहर भए गेल । ओसभ चारूकात अभय आ मधुलिकाकेँ ताकि रहल छल । ताबतेमे केओ चिचिआएल-

“अभय आ मधुलिकाकेँ लेने रविकान्त अपन समर्थकक संगे बाधमे पहुँचि गेल अछि ।”

सुरेश आ ओकर समर्थकसभ बाध दिस बढ़ल । परिस्थिति हाथसँ बाहर होइत देखि रविकान्त किछु समर्थकक संगे मधुलिकाकेँ कहुना कए आगु पठा देलक । किछुगोटे अभयकसंगे दोसर दिस बढ़ल । ताबे सुरेश आ ओकर लठैतसभ ओकरासभकेँ चारूकातसँ घेरि लेलक । रविकान्त अपन समर्थकसभक संगे जान बँचा कए भागल। अभयकेँ लए कए सुरेशक समर्थकसभ अपन गाम दिस बिदा भेल ।

एहि घटनाक बाद सुरेश चोटाएल साँप जकाँ मौकाक ताकमे रहथि । आगु केना की कएल जाए से गंभीर चिंताक विषय छल ।

“रविकान्तक गुंडा दल हमरासँ बँचि नहि सकैत अछि। ओकरा अपन केलहाक फल भोगहि पड़तैक।” -बड़बड़ाइत ओ पोखरि दिस जा रहल छलाह ।

ओमहर मधुलिकाकेँ लए कए रविकान्त किछु विश्वस्त सहयोगीक संगे अपन बासा दिस बिदा भेलाह । ओतए पहिनेसँ पुलिस घात लगओने रहए। रविकान्तकेँ गेटेपर घेरि लेलक । कतबो ओ पुलिसकेँ बुझेबाक प्रयास केलक ,पुलिस किछु नहि सुनलक । रविकान्तकेँ पकड़ि पुलिस मजिष्ट्रेटक सम्मुख प्रस्तुत

केलक । मजिष्ट्रेट पुलिसक बात मानि ओकरा जहल पठा देलथि।

१४

देखबा-सुनबामे बेस भव्य छलाह रविकान्त । बेसी नमगर नहि मुदा भुट्टो नहि कहल जा सकैत छल। भोर-साँझ डंड-बैठक करथि जाहिसँ हुनकर बगए पहलमान सन लगैत छल। कहिओ काल कुश्ती सेहो खेलाथि । रविकान्तक पिता हरि मामुली पढ़ल-लिखल रहथि । ओ नेनामे पढ़एमे बहुत तेजगर रहथि मुदा उचित अवसरक अभावमे आगु नहि पढ़ि सकलाह । ताहि बातक अफसोच हुनका सभदिन रहलनि । तेँ ओ चाहथि जे रविकान्त नीकसँ पढ़थि,जीवनमे आगा बढ़थि,नाम करथि । मुदा से कपारमे लिखलो रहनि तखन ने ।

रविकान्तकेँ पढ़ाइमे मोन नहि लगनि । तथापि जेना-तेना मैट्रिकक परीक्षा पास कए गेलाह । पिताक आग्रहपर आइएमे नाम लिखओलाह । आइएक परीक्षा भए रहल छल । रविकान्तक इच्छा रहनि जे हुनक पिता परीक्षामे मदति करथिन। मुदा ओ परीक्षामे पुर्ची नहि पहुँचा सकल रहथिन । रविकान्त फेल भए गेलाह । तथापि पिताक आग्रहपर अगिलासाल फेर परीक्षामे बैसलाह । जखन दोसरो बेर आइएमे फेल कए गेलाह तँ ओ पितापर बहुत बिगड़ल रहथिन-

“कहैत छलहुँ जे पहिनेसँ पुर्ची बनबा कए राखू । सभक गार्जिअन धरा-धर पुर्ची पहुँचा रहल छल आ हम मुँह तकैत रही। एकहुटा पुर्ची अहाँ बूते पहुँचाएल नहि भेल । एहनमे हम की करितहुँ? जे कनी-मनी लगक विद्यार्थीसँ मदति भेल ओहीसँ काज चलेलहुँ । हम एकसरे की कए सकैत छलहुँ? आब जाउ,काँपीक पता लगाउ। कालेजे-कालेजे घुमू । नेताजीकेँ पकड़ू । आब ओएहटा उपाय बाँचल अछि।” आखिर हुनकर बाबूजी प्रयासमे लागि गेलाह आ रविकान्त जेना-तेना आइएक परीक्षा पास कए गेलाह ।

रविकान्तक घरक परिस्थिति सेहो ठीक नहि रहनि । नौकरी कोनो भेटनि नहि । तखन की करथि? बहुत दिनधरि एमहर-ओमहर प्रयास करैत रहलाह । गामघरसँ नौकरीक फिराकमे बहुतरास लोक दिल्ली जाइत रहैत छल । एक बेर रविकान्तोकेँ मोन भेलनि जे चली दल्ली । की पता भाग्य काज कए जाए? गौंवासभक संगे ओ दिल्ली गेलाह जरूर मुदा सफल नहि भेलाह। ओहिठाम भोरेसँ लोकसभकेँ दौड़ा-दौड़ी करैत देखि ओहो प्रयास केलाह । एकबेर सेक्युरिटी गार्डक नौकरी भेटिओ गेलनि। कोनो महलक रखबार भए गेलाह । दिन -राति महलक आगु बनल छतरीमे बैसल रहू । के अबैत अछि,के जाइत अछि तकर हिसाब करैत रहू । ओहीठाम चाह आबि जाइत,जलखै आबि जाइत । एतबाधरि तँ ठीक रहैक। मुदा तकर बाद जेसभ भेल से हुनका असह्य भए गेलनि । असलमे ओहि महलमे तीनटा महिला मात्र रहैत छलैक । ओ सभ राति-बिराति घर अबैत छलैक । निसाँसँ पैर डगमग करैत रहैत छलैक,

मुँह भबकैत रहैत छलैक । ओहनो हालमे ओ सभ रविकान्तपर हुकुम चलबैत छलैक । आओर किछु-किछु कहैत छलैक । पता नहि रविकान्त ओकरसभक कहब बुझबो करथि कि नहि? परिणामत; दूपहर रातिमे ओ सभ रविकान्तकेँ की-की ने कहि दैत छलनि । एहिसभसँ तंग भए रविकान्त गाम लौटि गेलाह ।

गाम घुरि गेलाक बाद जखन कोनो आओर रस्ता नहि निकललनि तँ ओ समाजसेवामे लागि गेलाह । समाज सेवा एकटा एहन क्षेत्र थिक जतए सभतरहक लोक खपि जाइत छथि। सएह हिनको संग भेलनि । रविकान्त समाजसेवी बनि गाम-गाम घुमैत छलाह । जकरा कोनो परेसानी होइक,से मदति करथि। जँ ककरो कन्यादानमे कोनो वरपक्षक लोक तंग करैक तँ ओ कन्यापक्षकेँ मदति करबामे जान लगा दैत छलाह । रविकान्त एहिसँ समाजमे लोकप्रिय होइत गेलाह।

गाम-घरसँ कतेको युवकसभ रोजगारक हेतु बहराएल रहथि । मुदा ककरो काज नहि भेटनि । ओसभ रोजगार नहि भेटबाक कारण परेसान रहथि। ओ सभ रविकान्तक संपर्कमे अएलाह । रविकान्त ओहि युवकसभकेँ अपना संगे कए लेलाह। क्रमशः ओ सभक एकटा गुट बना लेलथि । ओएह गुट क्रमशः प्रगतिपथक नामसँ विख्यात भेल । प्रगतिपथक कोनो निश्चित ठेकाना नहि छलैक । कोनो कार्यालय वा कर्मचारी नहि छलैक। शुरूमे तँ ई हाल रहैक जे ओ सभ कतए रहताह आ की खेताह तकरो कोनो ठेकान नहि छलनि ।

दरभंगा हवाइ अड्डासँ कनीके फटकी एकटा मकान बहुत दिनसँ खाली पड़ल छलैक । ओकर मालिक पटनामे

नौकरी करैत छलाह । दरभंगेक लगीचमे गाम रहनि । तेँ सोचलाह जे गामक लग सहरमे सेवानिवृत्तिक बाद रहब। ताहि उद्देश्यसँ ओ मकान बनओलथि । मुदा मकानक अंतिम चरणक काजसभ बाँकि रहि गेल रहैक । टाका घटि जेबाक कारण बहुत दिनसँ ओ मकान जस-के तस पड़ल छल । रविकान्त ओहि मकानमे लागल आठटा तालाकेँ तोड़ि कए सदल-बल ओहिमे डेरा जमा लेलथि । तहिएसँ ओ प्रगतिपथक अघोषित कार्यालय बनि गेल। बाहरसँ ओहि घरमे पहिने जकाँ ताला ठोकल रहैत छलैक जाहिसँ केओ नहि बूझि सकैत छल जे मकानक अंदर की भए रहल अछि ? पछिलका गेटसँ ओसभ अबैत-जाइत छलाह।

प्रगतिपथक सोच व्यवहारिक रहैक । ओसभ लकीरक फकीर नहि रहए । नीक संकल्पक पूर्त्तिक हेतु जँ अधलाहो रस्ता बाटे जाए पड़ए तँ कोनो बात नहि । ताहि क्रममे ओ सभ कानूनोक उल्लंघन करएमे नहि डराइत छलाह । इएह कारण छल जे पुलिस एहि संस्थाक प्रमुख कार्यकर्त्तासभपर नजरि राखब शुरु कए देने छल।

प्रगतिपथमे के किएक सामिल भेल से कहब तँ कहिते रहि जाएब । सभक अपन-अपन खिस्सा रहैक। सभक अपन-अपन इतिहास रहैक । सभक फराक-फराक पारिवारिक,सामाजिक पृष्ठभूमि रहैक । मुदा सभक लक्ष्य एक रहैक,सभक संकल्प एक रहैक । कतहु कोनो मतभिन्नता नहि रहैक । तकरे परिणाम छल जे सीमित साधनक अछैत बहुत कम समयमे ओ सभ समाजपर अपन प्रभाव बनाबएमे सफल रहए । क्रमशः प्रगतिपथक चर्चा कोनो-ने-कोनो रूपमे गामे-गाम

होबए लागल । केओ ओकर प्रशंसा करथि तँ केओ निंदा । मुदा चर्चा जरूर करथि । साँझमे घूरतर बैसल लोकसभ होथि वा भोरमे चौकपर गप्प-सप्प हेतु एकत्रित ग्रामीणसभ मुदा सभक बीचमे चर्चाक एकटा विन्दु प्रगतिपथ रहिते छल।

रविकान्तक नेतृत्वमे प्रगतिपथक प्रभाव गाम-घरमे बढ़िते गेल । बहुत लोककेँ बहुत तरहें तकर फएदो भेलैक। कैकटा उजरैत घर फेरसँ बसि गेल । कैकटा मसोमातक डीह-डाबर बँचि गेल । कैक गोटेक दिआद-बाद ओकर हिस्साक पुस्तैनी जमीन,घरारी हरपि लेने रहैक,जेना साँप बेंगकेँ निगलि जाइत अछि । प्रगतिपथ ओकरासभक हेतु रामबाण साबित भेल। कहक माने जे रविकान्त कनिके दिनमे ओसभ कए गेलाह जे सालोंसँ लोकक मोनमे गड़ल छलैक , जाहि लेल कतेको परिवार आपसी शत्रुतामे जीबैत छल । परिणामस्वरूप, केओ कतहु रविकान्तक विरोधमे किछु बाजि कए साबूत नहि रहि सकैत छल । ई छलैक रविकान्तक सामाजिक वर्चस्व, जे देखिते-देखिते चारूकात पसरि गेल छल ।

“बाह रे रविकान्त! कमाल कए देलक।” -सभ सएह बजैत रहैत छल ।

रविकान्त आ हुनकर संगीसभ प्रगतिपथक नामसँ गामे-गाम भए रहल फसादसभक समाधान करए लगलाह। नित्य नव-नव लोकसभसँ भेंट-घाँटक अतिरिक्त समाजमे यश सेहो होबए लगलनि । किछु आमदनी सेहो भए जानि । हुनकामे खूबी ई छलनि जे ओ खोलि कए कहि देथिन –“हमरा कोनो नौकरी तँ अछि नहि,तखन तँ एहीसँ हमरो गुजर होएत । मोटर साइकिल

कोनो पानिपर तँ चलत नहि? ओकरो तेल चाही,पेट्रोल चाही । हाकिमकेँ सेवा चाही। से सभ कतए सँ हेतैक? हे! हम किछु नहि लेब आ लेब कोना नहि? आखिर हम भोजन नहि करब,चाह नहि पीब तँ जीब कोना? जीबे नहि करब तँ समाजसेवा केना होएत?" लोकसभकेँ ताहि बातसँ कोनो दिक्कति नहि रहैक । ओ सुबिधा शुल्क कहि कए सहर्ष हुनकर जेबी गरमा दैत छलाह,बस काज भए जेबाक चाही ।

हुनकर सुविधा शुल्कमे निरंतर बृद्धि होइत रहल । आब जखन हुनकर आर्थिक स्थिति मजगूत होइत गेल तँ खान-पानमे सेहो सुधार भेलनि,हेबेक चाहिअनि-समाजसेवी जे छलाह। हुनकर संगे दिन-राति घुमि रहल गुटक लोकसभकेँ सेहो खेबा-पिबाक बेस सुबिधा भेटि रहल छलैक । आओर ओकरासभकेँ चाहिऐक की ?

१५

मधुलिकाक इच्छा रहनि जे अभयक संग हुनकर दोस्तीक बिआहमे परिणत होअए,जखन कि अभय एहि विषयपर किछु नहि सोचने रहथि । ऊपरसँ हुनकर पिताक मनोरथ किछु आओर छलनि। बीचमे तरह-तरहक फसाद सभ भेल । रविकान्त आ हुनकर नवोदित संस्था मधुलिकाक मदति करबाक प्रयास केलथि जरूर मुदा उल्टे ओ अपने जहल पहुँचि

गेलाह । सुरेशक बनाओल चक्रव्यूहमे ओ अभिमन्यु जकाँ फँसि गेलाह आ आब जहलमे समय काटि रहल छलाह ।

रविकान्त जहलसँ निकलबाक बहुत प्रयास केलथि मुदा हुनकर जमानतक दर्खास्त कोर्टमे अस्वीकार होइत गेलनि । असलमे हुनका ने टाका छलनि ने सिफारिस। ठीक ओकर उल्टा सुरेश सभ तरहें सक्षम छलाह। दिन-राति एक कए देलनि आ रविकान्तक जमानत नहिए होबए देलखिन । सुरेश केँ डर रहनि जे जँ रविकान्त जहलसँ बाहर भेल तँ हुनकर पुत्रक हेतु संकट तय अछि । एही भयसँ ओ दिन-राति एक कए देलनि,पानि जकाँ टाका बहा देलनि, मधुबनी ,दरभंगा,पटना दौड़ैत रहलाह । जे किछु संभव छल से सभ केलनि जाहिसँ रविकान्तक जमानत नहि होनि। रविकान्तक कोनो ओकील नहि छल । सरकारक दिससँ ओकरा कानूनी सहायता केन्द्रसँ ओकील देल गेल रहैक। मुदा ओ विरोधीपक्षसँ मिलि गेलैक । कोर्टमे किछु बजबे नहि करैक । चारिटा तारीख जखन एहिना गुजरि गेल तँ जज साहेबकेँ मामिलाक असलियत पता लागि गेलनि। कोर्टमे रविकान्तके अबितहि ओकरा जमानतपर छोड़बाक आदेश दए देलथि । सरकारी ओकील अपना भरि बहुत विरोध केलक मुदा जज साहेब अड़ि गेलाह । रविकान्त जमानतपर छोड़ि देल गेलाह।

मोहिनीसँ ट्रेनमे अकस्मात भेंटक बाद हरि गाम आबि तँ गेलाह मुदा हुनकर मोन सदिखन ओकरेमे लटकल रहैत छलनि। बीच-बीचमे ओ कैक बेर मोहिनीसँ भेंट करए पटना जेबो करथि। एहिना एक बेर ओ पटना जाइत रहथि। संयोग एहन भेलैक जे सुरेश सेहो दरभंगामे भेटि गेलखिन । ओहो पटना जाइत रहथि । रस्तामे हरि हुनका मोहिनीक बारेमे कहलखिन । मोहिनीक पटना रहबाक समाचार सुनि सुरेश बहुत प्रसन्न भेलाह। हुनको मोन मोहिनीसँ भेंट करबाक हेतु छटपट करए लगलनि । अस्तु,दुनूगोटे पटना जाए मोहिनीसँ भेंट करबाक विचार केलथि।

संयोग रहैक जे ओहिदिन गंगामे बहुत बाढ़ि आबि गेल रहैक । ओही कारणसँ सौंसे पटना डुबि गेल रहए। पटनाक कैकटा कालोनीसभ समुद्र बनि गेल छल । लोकसभ यत्र-तत्र शरण लेने छल । एहने समयमे दुनूगोटे पहलेजाघाटपर जहाजमे बैसि गेल रहथि । ई जनितो जे जहाजमे यात्रा करब जानलेबा भए सकैत अछि,ओसभ ककरो बात नहि मानलाह । जहाज लगभग खालिए छल । जहाज सीटी मारलक आ महेन्द्रूघाटक हेतु बिदा भेल। शुरुमे गंगा तैओ संयत रहथि । मुदा बीच धारमे जा कए जहाज ऊपर-नीचा करए लागल । जहाजसँ घोषणा होबए लागल-

“हमसभ जहाजकेँ बचेबाक भरिसक प्रयासमे लागल छी । मुदा हालत बहुत खराप अछि । करवनो किछु भए सकैत अछि । तेँ जकरा हेलए अबैत होअए से गंगामे कुदि कए अपन जान बचेबाक प्रयास कए सकैत छी । जहाज बाँचत कि डुबि जाएत, किछु ठेकान नहि अछि ।”

औ बाबू! घोषणा सुनितहि कैकगोटे गंगामे कुदि गेलाह। लोकसभकेँ जान बचेबाक अंतिम प्रयास करैत देखि हरि आ सुरेश सेहो गंगामे कुदि गेलाह। कुदि तँ गेलाह मुदा तकरबाद हुनकासभक किछ अता-पता नहि चलि सकल । गंगाक तीव्र प्रवाहमे बाहर नहि आबि सकलाह, कहि नहि ओ सभ केमहर चलि गेलाह ।

थोड़बे कालमे जहाज सेहो डुबए लागल आ देखिते-देखिते ओ पूर्णतःअदृश्य भए गेल । सरकारकेँ एहि दुर्घटनाक जानकारी भेटलैक । किछु स्थानीय लोकसभ सेहो अपना स्तरसँ प्रयास केलक । मुदा समय तेहन विकराल छलैक जे सभटा प्रयास असफल रहल । जहाज चालकदलक संगे जलमग्न भए गेल । दोसर दिन भोरेसँ गोताखोरसभ डुबल लोकसभकेँ ताकएमे लागि गेल । कैकटा लास भेटबो केलैक मुदा हरि आ सुरेशक कोनो पता नहि चलल ।

१७

ओमहर पुलिस मधुलिकाकेँ लेने पटना बिदा भेल । पुलिसक जीप रस्तामे बाबाक आश्रम दिस मुड़ि गेल । एतेक काल तँ मधुलिका एहि बातसँ प्रसन्न रहथि जे ओ अपन डेरा जा रहल छथि। मुदा जखन जीप आमक गाछीक ओहिपार एकटा आश्रम लग ठाढ़ भेल तँ हुनकर माथा ठनकल। ओ जीपसँ किन्नहु उतरबाक हेतु तैयार नहि होथि । पुलिससभ लाखे बुझेबाक प्रयास केलक जे ओ सभ आश्रममे बाबाक दर्शन करताह आ तकर बाद हुनका पटना माए लग पहुँचा देल जेतनि ,मुदा ओ किछु सुनबाक लेल तैयार नहि रहथि । जीपक लग-पास ओ सभ आपसमे ओहिना बक-झक कए रहल छलाह कि डमरु बाबा ओतए पहुँचि गेलाह । हुनका देखितहि मधुलिकाक प्रसन्न भए गेलि। डमरु बाबा मधुलिकाक संगे आश्रमक मुख्यगेटसँ भीतर प्रवेश केलथि।

“आब हमसभ चली ।”-एकटा पुलिस बाजल ।

“बाबाक प्रसाद नहि लेबह।” -दोसर पुलिस बाजल ।

“बाबाक कोन ठेकान? जँ ध्यानस्त भए गेलाह तँ बैसले रहि जेबह ।”

“मुदा बिना प्रसाद लेने कोना जाएब?”

“से तँ ठीके । मुदा बाबा तँ अंदर चलि गेलाह । कहि नहि करवन दर्शन देताह।”

“हमरासभकेँ अगुताइए कथीक अछि? बाबा जखन निकलथि। ताबे हमहुसभ लग-पासमे घुमैत छी।”

“एहिठाम तँ किछु नहि देखा रहल अछि।”

“हमरासंगे आबह ने?”

पुलिस चुप-चाप आश्रमक मुख्यद्वारसँ भीतर गेल । मुख्यद्वारसँ सटले दहिना कात बाबाक अतिथि कक्ष छलनि । कोनो नवागंतुक स्वागत ओतहि कएल जाइत छल । ओसभ चुप-चाप ओमहरे बढ़ि रहल छल । कनी आगु गेल होएत कि बाबाक तीन-चारिटा चेला प्रकट भेल । ओसभ किछु रोक-टोक केलकैक । पुलिससभ ओहिठामसँ खसकल। मुदा जाइत केमहर? मुख्यद्वार तँ स्वतः बंद भए गेल रहैक । गेटेपर बैसि गेल।

मधुलिकाकेँ आश्रममे व्यवस्थित कए डमरु बाबा बाहर भेलाह । चिर प्रतीक्षाक बाद मधुलिकाक आगमनसँ हुनकर प्रसन्नताक अंत नहि छल । हुनका बाहर निकलितहि सेवादारसभ दौड़ल ।

“ओ सभ कतए गेल?”

“के सरकार?”

“एतबो ज्ञान नहि छौ जे हम एखन ककरा ताकि सकैत छी? ”

सेवादारसभ परेसान छल । की बजितए?

"जीप तँ एतहि लागल अछि मुदा ओ सभ कतए गेल?"- डमरु बाबा फेर बजलाह । एहि बेर सेवादारसभ बूझि गेल जे बाबा पुलिससभकेँ ताकि रहल छथि ।

"ओ सभ तँ चलि गेल।"

"एहन कदापि नहि भए सकैत अछि । ओकरासभकेँ ताकि कए आनह ।"

सेबादारसभक सिटीपिटी गुम्म रहैक । ओसभ पुलिससभकेँ ताकएमे लागि गेल । रच्छ भेलैक जे ओसभ गेटपर बैसल गप्प-सप्प कए रहल छल । सेवादारसभक जानमे-जान आएल। ओसभ पुलिससभकेँ बाबा लग लेने आएल । ओकरासभकेँ देखितहि बाबा प्रसन्न भए कहैत छथि-

"भगत! तूँसभ बहुत नीक काज केलह । हमरा एकर प्रतीक्षा छल। हम बुझिते रही जे आब ओ अबिते होएत ,से आबि गेल । मुदा एहि पुण्यक काजमे तूँ सभ सहभागी भेलह तेँ तोरासभकेँ तकर इनाम भेटतह ।" बाबा ओकरासभकेँ झोरा भरि-भरि उपहार देलखिन । बाबाक प्रसाद लए सिपाहीसभ धन्य भेल। मुदा ओहीमे एकटा सिपाही छल-रूपलाल । ओ किछु नहि छुलक । ओकरा देखि सभ छगुन्तामे रहए । बाबाक सिपहसलारसभ ओकरा कैकबेर इसारा सेहो करैक ।

"तकैत की छह? । उठाबह जे मोन होइत छह ।"

मुदा ओ टस सँ मस नहि भेल । थोड़े कालक बाद बाबा आश्रमक भीतर चलि गेलाह।

१८

गंगामे दुर्घटनामे जहाज डुबि जेबाक समाचार गाम पहुँचल। पहिने तँ लोकसभ विश्वास नहि केलक,ओकरासभकेँ होइक जे केओ दुष्टतासँ एहि समाचारकेँ गढ़ि लेने होएत मुदा जखन डमरु बाबा स्वयं गाम अएलाह तँ लोकसभक बाबासँ दुनूगोटेक बारेमे तरह-तरहक प्रश्न करैत रहल मुदा ओ किछु नहि बाजथि । बस डमरु बजा देथि । बाबासँ बेसी सबाल-जबाब करबाक ककरो साहस नहि होइक।

“कहीं तमसा गेलाह तँ उल्टो भए सकैत अछि ।”- गौंवासभ बाजथि। लोकसभकेँ बहुत परेसान देखि बाबा जाइत-जाइत एतबे कहलखिन-

“दुनूगोटेकेँ हमर चेला बचा लेलकैक । ओ सभ हमर आश्रम आएल छल । हम बहुत कहलिऐक जे हमरा संगे गाम चलह। मुदा ओ सभ अड़ि गेल । कहलक- आब कतहु नहि जाएब, कतहु नहि रहब। जे जिनगी आब भेटल अछि से भगवानक देल छनि, हुनकेमे लगा देब । हमसभ आब सोझे हिमालय जा रहल छी ।”

डमरु बाबा अपन पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार जनकपुर हेतु बिदा भए गेलाह । एहिबेर हुनका संगे रूपलाल आ किछु आओर भक्तसभ छल । ओ सभकेँ आश्रम वापस जेबाक हेतु कहि देलखिन । मात्र रूपलाल हुनकासंगे रहथि ।

ओहिठामसँ बिदा होइत ओ एकबेर फेर डमरु बजा देलाह । लोकसभक करमान लागि गेल छल । सभ बाबाक पैर छुबाक हेतु आगु आबए चाहैत छल । एतबेमे अभय डमरु बाबाक सामने अएलाह । बाबा हुनका देखितहि बाजि उठलाह-

“हम कहिआसँ तोहर बाट ताकि रहल छी ।”

“मुदा हमरा तँ केओ से बात नहि कहलक?”

“कहितह के? हम स्वयं तोरा कैकबेर संकेत केलहुँ । मुदा तूँ बूझि नहि सकलह ।”

डमरु बाबाक बात सुनि अभय छगुंतामे पड़ि गेलाह । मुदा बेसी गप्प करबाक समय नहि छल । गौंवासभ सेहो बाबासँ किछु-किछु प्रश्न करए चाहैत छल । मुदा बाबा रूपलालक संगे जनकपुर बिदा भए गेलाह । जाइत-जाइत अभयकेँ कहलखिन-

“एहिसभसँ निपटि कए हमर आश्रम चलि अबियह । हम ताबे जनकपुरसँ वापस आबि जाएब ।”- से कहि बाबा आगा बढ़ि गेलाह । अभय नहि बूझि सकल जे बाबा ओकरा आश्रम किएक बजा रहल छथि । डमरु बाबाक आदेशानुसार अभय हुनकर आश्रम जाइत रहथि कि रविकान्त भेटि गेलखिन। हुनका देखितहि अभय सकपका गेलाह । मुदा रविकान्त बहुत आश्वस्त छलाह । हुनका मोनमे कतहु तामस नहि छल । ओ अभयसँ पुछलखिन-

“कतए जा रहल छी?”

“डमरु बाबाक आश्रम जा रहल छी ।”

“हमहु चली की?”

“नीक काजमे जतेक गोटे सामिल होइ ततेक नीक।”

रविकान्त अभयक संगे डमरु बाबाक आश्रम बिदा भेलाह। ओसभ जखन डमरुबाबाक ओहिठाम पहुँचलाह तँ बाबा ओतए नहि रहथि । ओ रूपलालक संगे जनकपुर चलि गेल रहथि । ओना बाबा बेसीकाल घुमिते रहैत छलाह । तेँ जँ ककरो आश्रममे हुनकर दर्शन भए जाइक तँ ओ अपनाकेँ भाग्यवान बुझैत छल । रविकान्त आश्रममे पैर रखनहि छल कि ओकरा मधुलिका देखेलैक। मधुलिका सेहो ओकरा देखलक । दुनू गोटे एक-दोसरकेँ बड़ीकाल धरि देखिते रहि गेल। रविकान्तकेँ एना ठाढ़ देखि अभय चिंतामे पड़ि गेलाह।

“अखने तँ ई हमरासँ गप्प करैत छलाह ।”-अभय मोने-मोन सोचथि।

ताबे हुनको ध्यान मधुलिका पर गेलनि । मुदा ओ एकटक रविकान्तकेँ देखैत रहि गेलि ।

“सएह कहू केहन बदलि गेल ई । कोनो बात नहि । समय-समयक बात होइत छैक । मधुलिकाक संगे हमहु तँ नीक व्यवहार नहि कए सकल रही ।”-तरह-तरहक बातसभ अभयक मोनमे अबैत छल। कनी कालक बात सभकिछु सामान्य होबए लागल । मधुलिकाकेँ लगलैक जे रविकान्तक पाछा केओ ठाढ़ अछि । कनी ध्यान सँ देखलाक बाद ओकरा बुझा गेलैक जे ओ व्यक्ति केओ आओर नहि अभये थिक ।

“जे होअए, हमरा ककरो सँ की लेना-देना? जे ओकरा मोन भेलैक से ओ केलक । तहिना आब जे हमरा मोन होएत से हम करब ।” -मधुलिका मोने-मोन सोचए ।

डमरु बाबाक संगे रहैत-रहैत मधुलिकाक स्वास्थ्य बहुत उत्तम भए गेल रहैक । मोनमे निश्चिंतता आबि गेल रहैक । बाबाक निरंतर स्नेहसँ ओकरा एकटा नूतन जीवन भेटल रहैक । ओकरा अखनो नहि बूझल रहैक जे डमरुबाबा ओकर पूर्वजन्मक पिता छथि । मुदा ओ मधुलिकासँ असीम सिनेह करैत छलाह,ओकर सुख-सुविधा हेतु दिन-राति एक केने रहैत छलाह,से तँ ओ देखिते छलि ।

१९

डमरु बाबा जनकपुर पहुँचलाह । बाबामे ई गुण रहनि जे ओ ओ अपन ध्यानशक्तिसँ जखन चाहथि अपन इच्छानुसार पूर्वजन्ममे पहुँचि जाइत छलाह । ततबे नहि ,जखन जाहि जन्ममे रहैत छलाह तकर समस्त परिवेस तेहने भए जाइत छल। गौंवा-घरुआसभ ओही समयक अनुसार उपस्थित भए जाइत छल । मुदा तकर जानकारी ओकरे होइक जकरा बाबा चाहथि। डमरु बाबाक एहि शक्तिक अंदाज रूपलालकेँ जनकपुरमे भेलैक । बाबा जनकपुर अएलाक बाद सभसँ पहिने जानकी मंदिर पहुँचलाह । ओतए दर्शन केलाक बाद मंदिरसँ बाहर होइत

काल रूपलालसँ पुछलखिन-“देखैत छहक किछु कि नहि? तोरा लग के ठाढ़ छथुन?”

“बाबा! हम तँ किछु नहि बूझि पाबि रहल छी?”

“बुझबहक । कनीकाल ठहरह । सभ बात बुझबहक ।”

तकरबाद बाबा डमरु बजओलाह आ हँसि कए रूपलाल दिस तकलाह । रूपलाल तँ ठहाका पारि रहल छल।

“हमरासंगे ई सभ के छथि?”

“से तूँ कहबह की हम? तोहर लोकसभ छथुन,तूँही ने चिन्बहक?”

“ई तँ हमर पिता छथि । हिनका मरलो कैक साल भए गेलनि। फेर ओ कतएसँ आबि गेलाह?”

डमरु बाबाकेँ हँसी लागि गेलनि । रूपलालक पिता डमरु बाबा दिस दौड़ल । बाबा लग अबितहि हुनका पैर छुबि प्रणाम केलक ।

“कोना छह मुरली?”

“ठीके छी भैया! एहिबेर बहुत दिनपर भेंट भेलहुँ । हम तँ अहींक बाट तकैत रही ।”

“सोचलहुँ जे एहिबेर तोहर पुत्रकेँ संगे लेने चली । एकरा लेल तूँ बहुत बेकल रहैत छलह ।”- से कहि डमरु बाबा रूपलाल दिस इसारा केलनि । रूपलालकेँ देखि मुरली बहुत प्रसन्न भेलाह।

“ई तँ अहाँ बहुत नीक केलहुँ ।”

नीक-बेजाए की हेतैक? तखन तोरा शांति भेटि जाह तँ एहिसँ नीक की होएत?”

रूपलाल दुनू भाइक गप्प बहुत ध्यानसँ सुनैत रहल ।

जनकपुरमे डमरु बाबाक पूर्वजन्मक सहोदर भाइ मुरली रहैत छलखिन । पूर्वजन्ममे रूपलाल हुनके पुत्र छल । ओकर मृत्यु जनकपुर-राजविराज हाइवेपर सड़क दुर्घटनटमे भए गेल रहैक । ओहिसँ मुरली बहुत आहत भेल रहथि । दिन-राति उदास रहए लगलाह । क्रमशः हुनकर स्वास्थ्य गड़बड़ाइते गेलनि। थोड़बे दिनक बाद हुनको मृत्यु भए गेलनि। एतेक दिनक बाद डमरु बाबाक संगे रूपलालकेँ देखि मुरली आश्चर्यचकित छलाह। हुनका बुझेबे नहि करनि जे की देखि रहल छथि-सपना आ कि सही मे । एहिबातसँ डमरु बाबा बहुत प्रसन्न रहथि। ओ सभ बात बुझथि । आखिर मुरली आ रूपलालक भेंट भेल मुदा केओ ककरोसँ गप्प-सप्प नहि कए सकल। जाबे किछु होइत बाबा डमरु बजा देलाह आ फेर सभकिछु अदृश्य भए गेल।

“आब बुझलहक जे हम तोरा जनकपुर किएक अनने रहिअह?”

“बूझि तँ गेलिऐक मुदा एहिसँ हमर उत्सुकता तँ आओर बढ़ि गेल। एतेक दिनका बाद हम अपन पितासँ भेंट करैत रही कि अहाँ तर्र दए डमरु बजा देलिऐक ।”

“ठीके ने बजा देलिऐक । नहि बजबितहुँ तँ तूँ ओही दुनिआमे मोहित भेल पड़ल रहितह ।”

"नीके ने होइत । हम अपन पितासँ नीकसँ गप-सप्प करितहुँ ।"

"छोड़ह ई गप्प-सप्प । पाछु तकला सँ की फएदा । जे बित गेल तकरा बिसरने कल्याण अछि ।"

२०

डमरु बाबाक दर्शन करबाक हेतु लोकसभ आश्रम अबैत-जाइत रहैत छल। मुदा बाबा ओतए नहि रहथि । कतेक दिन हुनकर बाट ताकैत?केओ दू दिन,केओ चारि दिन रहि कए वापस भए जाइत छल । आश्रमसँ बाबाक दर्शन केने बिना वापस होइत काल ओकरासभक मोनमे निराशा रहैत छलैक । तथापि लोक अबिते रहैत छल । बाबाक गेलाक बाद आश्रमक मुख्य आकर्षण मधुलिका छलि । कतेको गोटेकेँ ओकरा बारेमे जानबाक उत्सुक्ता रहैत छलैक । मुदा ने केओ किछु पुछैक,ने केओ अपना मोने किछु कहितैक । मुदा रविकान्त आ अभय जरूर दिन-राति कोनो-ने-कोनो तरहसँ मधुलिकाक आगु-पाछु घुमैत रहैत छल । करवनो रविकान्तकेँ होइक जे मधुलिका अभयकेँ बेसी मानैत अछि तँ करवनो अभयकेँ तेहने भाव मोनमे अबैक । ओ तँ कैकबेर मधुलिकाकेँ किछु-किछु कहिओ दैक । मुदा मधुलिकाक हेतु धनि-सन । ओकरा जे अपना नीक लगैक सएह करए,जकरा जे बाजक मोन होउक से बाजओ ।

आश्रममे अएलाक बाद रविकान्तक स्वभावमे बहुत परिवर्तन भेल । ओकरा सुतलमे कैकबेर लगैक जेना बाबा सिरमामे बैसल किछु कहि रहल छथि । एक राति तँ हदे भए गेलैक। रविकान्त सपनाइत रहए। ओकरा लगलैक जेना डमरु बाबा ओकरा लगमे ठाढ़ भए हँसि रहल छथि । किछु कहि रहल छथि।"

"की बात छेक बाबा? एना किएक हँसि रहल छी? हमरा बहुत डर लागि रहल अछि ।"

"एहिमे डरेबाक कोन बात छैक? "

"अहाँ तँ रूपे तेहने धेने छी जे ककरो डर लगतैक ।"

"से की? "

"हमरा तँ लागि रहल अछि जेना अहाँ बाँसोसँ बेसी पैघ भए गेल छी आ बसातमे हिलि-डोलि रहल छी।"

"आओर की देखाइत छह? "

"लगैत अछि जेना अहाँ आकाशमे ठेकल जा रहल छी। अहाँक हाथमे भीजल धोती अछि जकरा अहाँ आकाशमे धाजा जकाँ फहरा रहल छी ।"

"ई सभ सुनि बाबा जोरसँ हँसि देलाह।

"हम तँ अखन जनकपुरमे छी । तखन तोरा रातिमे हम आश्रममे कोना देखा रहल छिअह?"

"सएह ने डरक बात छैक बाबा । हमरो बूझल अछि जे अहाँ अखन जनकपुरमे छी । मुदा नित्य बीतला रातिमे अहाँ

हमर सिरमा लग ठाढ़ रहैत छी । ततबे नहि, हमरा किछु-किछु कहितो रहैत छी ।”

“अच्छा, चिंता नहि करह । हम किछु दिनक बाद ओतहि आबि रहल छी ।”

रातिमे रविकान्त बाबाकेँ सपनामे देखलक आ भोरे डमरु बाबा स्वयं आश्रम पहुँचि गेलाह । सभसँ पहिने मधुलिका हुनका देखलक । ओकर प्रसन्नताक अंत नहि छल ।

“अहाँ तँ बहुत समय लगा देलिऐक ।”

बाबा हँसि देलाह ।

“अहाँकेँ तँ सभबातपर हँसिए लागि जाइत अछि ।”

“से की? तोरा कोनो कष्ट भेलह की? ”

हमरा कष्ट किछु नहि भेल मुदा अहाँक भक्तसभ परेसान छलाह। रविकान्त आ अभय कतेको दिनसँ आबि कए अहाँक बाट ताकि रहल छथि ।

“ओकरासभकेँ तँ हमरासँ निरंतर संपर्क बनल रहैत छैक। तखन परेसान किएक छल ? कोनो खास बात?”

“से की रहतैक । मुदा ओसभ अहींसँ भेंट करबाक हेतु आएल छथि । कहैत रहैत छथि जे बाबा हमरासभकेँ आबक हेतु समाद देने छलाह । मुदा अपने चलि गेलाह । हम कहुना कए हुनकासभकेँ रोकने रहलहुँ नहि तँ ओ सभ कहिआ ने चलि गेल रहितथि ।”

मधुलिकाक बात सुनि कए बाबा जोरसँ हँसि देलाह । फेर कहैत छथि-

"चलि कोना जइतथि?"

"अहाँक बात बूझब हमरा वशक नहि अछि ।"

"तोरा चिंता किएक होइत छह? हमसभ बात बूझि रहल छी ने।"

से कहि बाबा डमरू जोरसँ बजा देलाह । बाबाक डमरुक आबाज सुनितहि रविकान्त दौड़ल अएलाह । अभय पोखरिदिस गेल रहथि । ओतहु हुनका बाबाक डमरुक आबाज सुनबामे अएलनि । ओ जलदीसँ एहिसभसँ निवृत भए आश्रम दिस बढ़लाह।

२१

आश्रममे डमरु बाबाक आगमनक समाचार बिजली जकाँ पसरि गेल । लग-पासक गामसँ भक्त लोकनि सभ काज छोड़ि आश्रम दिस बिदा भए गेलाह । क्रमशः आश्रमक लग-पासमे लोकक करमान लागि गेल । रविकान्तक संगठन प्रगतिपथक कार्यकर्तासभ सेहो आश्रम पहुँचि गेलाह । हुनका लोकनिक ओहिठाम आगमनक प्रमुख कारण बाबा नहि अपितु रविकान्त स्वयं छलाह । जेना-तेना हुनकासभकेँ रविकान्तक बारेमे पता भेटलैक । ओसभ तँ अहुरिआ काटि रहल छल जे कहुना हुनकासँ भेंट होअए । मुदा आश्रम अएलाक बाद

ओहोसभ बाबाक भक्तसभक संपर्कमे अएलाह । बाबाक चमत्कारिक शक्तिक बारेमे हुनकासभकेँ बुझबाक मौका भेटलनि ।

डमरुबाबा लग भक्तसभक मेला लागल रहैत छल । जकरा जे पार लागैक से बाबाक हेतु उपहार अनैत छल । मुदा बाबा किछु छुबितो नहि छलाह । बाबाक मचानक दछिनबारि कातमे उपहारक ढेरी लागल रहैत छल । जखन भक्त लोकनिपर बाबा प्रसन्न होइतथि तँ चेलाकेँ इसारा करितथि । ओ भक्तलोकनिसँ प्राप्त उपहारकेँ हुनकेसभमे बाँटि दितथि। लोकसभ ओकरा बाबाक प्रसाद बूझि सहर्ष स्वीकार कए लेथि। एतेक भक्तक जुटान देखि बाबा आश्रमसँ बाहर दलानपर अएलाह आ जोरसँ डमरु बजा देलाह । बाबाक चेलासभ हुनकर संकेत बूझि भक्त लोकनिकेँ प्रसाद वितरण करए लागल। रंग-विरंगक फल,मेवा,जिलेबी,पेनतोआ,मुंगबा,खाजा खाइत -खाइत लोकसभ नकमानि भए गेल । सभगोटेयथेष्ट भोजन केलनि आ संतुष्ट भए बाबाक महिमाक वर्णन करए लगलाह। तकरबाद सभककेँ किछु-ने-किछु विदाइ देल गेल । ककरो हाथमे टाका तँ ककरो हाथमे तौनी। केओ सलगा तँ केओ मोफलर सम्हारि रहल छल । जकरा जाहि वस्तुक दरकार छलैक तकरा सएह भेटलैक । सभ आश्चर्यचकित रहए । बाबा एकबेर फेर डमरु बजओलाह । देखिते-देखिते भक्त लोकनि ससरए लगलाह। साँझ होइत-होइत आश्रम खाली भए गेल । मुदा रविकान्तक संगीसभ अखनो ओतए पटोटनि देने रहथि ।

रातिभरि ओ सभ ओहिना रहि गेलाह । भोरे जखन बाबाकेँ ई बात पता लगलनि तँ ओ बहुत तमसेलाह।

"की बात छैक? ईसभ की चाहि रहल अछि? "

-ओ रविकान्तकेँ बजा कए पुछलखिन । रविकान्त की बजितथि? तथापि कहलखिन-

"हम जे अहाँकेँ किछु कहब से अहाँ अपने सभकिछु बुझैत छी। अहाँकेँ जन्म-जन्मक जानकारी अछि । तखन अहीं कहू जे ई सभ के अछि आ की चाहैत अछि?"

बाबा डमरु बजओलाह । डमरुक आबाज सुनितहि रविकान्तक संगीसभ बाबाक चारूकात जमा भए गेलाह। हुनकासभकेँ देखितहि बाबा फेरसँ डमरु बजा देलाह । बाह रे बाबा! एमहर डमरु बाजल आ ओमहर रविकान्त आ ओकर संगीसभ पूर्वजन्ममे पहुँचि गेलाह ।

बाबाक डमरु बाजल आ हुनका लग-पासमे बैसल-ठाढ़ जे केओ छल सभकेँ जेना बहुत जोर झटका लगलैक । केओ किछु देखि रहल छल तँ केओ किछु । रविकान्त आ ओकर संगीसभ पूर्वजन्ममे गौंवा रहथि । सुरेश आ हरि सेहो ओही गामक रहथि । गामसँ सटले बाध रहैक । ओहि बाधक बीचमे एकटा खत्ता रहैक। एक बेर भयानक अकाल पड़ल । लोककेँ भोजनोक पराभव होबए लगलैक । तखन जकरा जे भेटैक से खाइत छल । खत्ताक माछक हेतु सभ दिन-राति एक केने रहैत छल । रहि-रहि कए ओहि खत्ताक माछ मारबाक हेतु गाममे झंझट भए जाइक ।एकदिन केओ दुष्टतासँ खत्ताक पानिमे जहर

मिला देलक । भोर भेने माछसभ खत्ताक चारूकात पटोटनि देने छल । माछकेँ एना पड़ल देखि गामभरिक लोक जमा भए गेल। जकरा जे पार लगलैक ततेक माछ उठओने गेल । मुदा ओ माछसभ तँ रहैक विषाक्त । माछ खेलाक बाद सौंसे गामक लोक दुखित पड़ि गेल । के ककरा देखैत? दोसर दिन भोर होइत-होइत गामक अधिकांश लोकक अकाल मृत्यु भए गेल । ओही समयसँ रविकान्त आ हुनकर संगी सभक आत्मा भटकि रहल छल । कतेको लोकसभक आत्मा भटकि रहल छल । संयोगसँ ओ सभ फेर लगे-पासमे जन्म लेलक आ कोनो-ने-कोनो तरहें पछिला जन्मक ओलि चुकाबएमे लागल रहल।

ई सभ दृश्य रविकान्त आ ओकरसभक संगी देखलक । अभय,मधुलिका,रूपलाल सेहो अपन-अपन पूर्वजन्मक वृतांत बुझलनि । सभकेँ परेसान देखि बाबा एकबेर फेर डमरु बजा देलाह। सभक मोन स्थिर भेलैक।

बाबा हँसि रहल छलाह आ लग-पास सभ केओ छगुन्तामे छल । डमरुक आबाज सुनि कए मधुलिका आ अभय सहो बाबा लग पहुँचि गेलाह । ओहोसभ अपन-अपन पूर्वजन्ममे पहुँचि गेलाह। ओहिकालमे मधुलिका पहिल बेर बुझलक जे डमरुबाबा ओकर पूर्वजन्मक पिता छथि । से बुझितहि मधुलिका बाबाक पैरपर खसि पड़लि। केओ आओर किछु नहि देखि रहल छल । मुदा बाबा सभ बूझि रहल छलाह । ओ मधुलिकाकेँ स्नेहसँ अपना लग बैसा लेलाह । मुदा मधुलिकाकेँ रहले नहि होइक । ओ सभ बात तुरंते बूझि जाए चाहैत छलि।

"आखिर हमर किछु तँ गलती रहल होएत जे अहाँसँ असमयमे फराक भए गेलहुँ ।"

बाबा ओकर बात सुनि कए हँसए लगलाह ।

"हँसलासँ काज नहि चलत । हमरासभ बात नीकसँ बुझाउ जाहिसँ हमरा शांति होबए ।"

ओमहर अभय कहि नहि की देखेलैक,के की कहि देलकैक जे ओ परेसान भए गेल रहए । सभकेँ परेसान देखि बाबा एकबेर फेर डमरु बजओलाह। सभ पूर्ववत भए गेल । सभकेँ लगलैक जेना कोनो सपना देखने होअए।

रविकान्त आ ओकर संगीसभ बाबासँ बहुत प्रभावित रहथि। ओ सभ किन्नहु बाबाक आश्रमसँ जेबे नहि करथि । आखिर बाबा ओकरासभकेँ बुझेलखिन-

"हमरा लग रहलासँ की हेतह? गंगोमे बेंग होइत छैक । तेँ हमरा लगेमे रहबह ताहिसँ तोरासभक मुक्ति संभव नहि अछि।"

"तखन हमसभ की करू? "

"तूँ सभ प्रयाग चलि जाह । ओहिठाम कुंभ लागए बला छैक । कुंभमे बड़का-बड़का संत-महात्मा सभ अओताह । हुनकर सेवा करिअह । तखने तोरासभकेभ आगुक रस्ता भेटतह।"

२२

डमरु बाबा भोरे रुपलालक संगे बिदा भए गेलाह। भोरुका समय रहैक । भगवान सूर्यक तेजपुंजसँ समस्त आश्रम जगमग कए रहल छल । जाइत काल बाबा डमरु बजा देलथि । बाबाक डमरु सुनि कए मधुलिका,रविकान्त आ अभय दौड़ल अएलथि । सभकेँ बूझल रहैक जे जखन बाबा कतहु बिदा होइत छथि तँ ककरो भेंट नहि करैत छथि। ककरो किछु नहि कहैत छथि । तखन जाइत-जाइत बाबा डमरु किएक बजओलथि?

सभ एहिबातसँ चिंतित रहथि । मुदा बाबा किछु नहि बजलाह । सभगोटे बाबाकेँ प्रणाम केलथि । बाबा झोरा लटकओलाह आ रूपलालक संगे बिदा भए गेलाह । बाबाक गेलाक बाद मधुलिका आश्रम छोड़बाक हेतु किन्नहु तैयार नहि रहथि । अभय आ रविकान्त हुनका छोड़बाक हेतु तैयार नहि रहथि। बाबा तँ अंतर्यामी छलाह । हुनका सभ बात बुझाइन जे आगा की-की होएत? तेँ अपना भरि डमरु बजा कए ओकरासभकेँ सचेष्ट केलखिन । मुदा केओ हुनकर इसारा बुझबाक हेतु तैयार नहि रहथि।

“रूपलाल! रूपलाल!” -केओ पाछुसँ चिकरि रहल छल।

“तूँ के छह आ हमर नाम लए कए चिकरि रहल छह?”

“हम छी अजितेश।”

“ के अजितेश?”

“मधुलिकाक पिता अजितेश, मोहिनीक पति अजितेश। आबो बुझलहक कि नहि?”

अजितेशक विचित्र ढब देखि रूपलाल डरा गेल । अजितेशकेँ पैर नहि रहैक । एक्केटा हाथ रहैक । माथा सेहो जेना चूर-चूर भए गेल रहैक । देहसँ दुर्गंध अबैत रहैक ।

रूपलाल डरा गेल ।

“बचाउ! बचाउ! बाबा बचाउ!” -ओ चिकरि,चिकरि कए बाबाकेँ गोहार लगा रहल छल । मुदा बाबा कतहु नहि देखाथि । आखिर ओ बेहोश भए ठामहि खसि पड़ल । रूपलाल जे बेहोश भेल से भेल । अजितेश ओकर देहसँ प्राण निकलैत देखि प्रसन्न रहए।

प्रातभेने जखन मधुलिकाक निन्न टुटलनि तँ बहुत डराएल छलि । सेवादारसभ भोरुका चाह अनलक । अभय आ रविकान्त सेहो पहुँचलाह । सभक हाथमे चाह आ भोरुका अखबार छल । मुदा ई की? अखबारक मुख्यपृष्ठपर समााचार पढ़ि ओ सभ चौकल-

“पुलिसकर्मी रूपलालक शव संदिग्ध हालतिमे पुलिस लाइन लग पाओल गेल ।”

चाह पिलाक बाद ओ सभ पुलिस लाइन दिस बिदा भेलाह। पुलिस लाइन जेबा काल एकटा बेस पैघ चओर पड़ैत छलैक । तीनूगोटे रिक्सासँ चओर बाटे जाइत छलाह कि लगलनि जेना केओ चिचिआ रहल अछि-

"खबरदार! केओ आगा नहि बढ़ए।"

रिक्साबला रिक्सा रोकि देलक । एतबहिमे नंग-धरंग केओ व्यक्ति ओकरासभक आगामे रस्ता छेकि कए ठाढ़ भए गेल । खबरदार! केओ भगबाक प्रयास करबह तँ रूपलालेबला हाल हेतह । मधुलिका हनुमान चालीसा पढ़ए लगलि । रविकान्त ,अभयक हाथ पकड़ने ठाढ़ भए गेलाह,जेना कोनो मूरुत होथि ।

"तूँ के छह आ हमरा सभक रस्ता किएक छेकि रहल छह?"-मधुलिका बाजलि ।

"हम छी तोहर पिता अजितेश।"

"की बात करैत छी ? ओ तँ हाकिम छथि । कतहु नौकरी करैत छथि ।"

"सभ झूठ । ओ जे छथि,से तोहर सामने छथि ।"

से कहि ओ ठहाका पाड़लक । तीनूगोटे एक-दोसरसँ सटि गेल । मुदा ताहि सँ की? रच्छ भेलैक जे मधुलिकाक ध्यान ओकर बामा हाथमे बान्हल यंत्रपर पड़लैक । ओ यंत्रेँ छुनहि छल कि सभकिछु बिला गेलैक । ने आब ओतए अजितेश छल ने कोनो तरहक आबाज सुनबामे अबैक । ओ तँ बचि गेल मुदा रविकान्त आ अभय कतहु नहि देखाइत छलैक । एहि बातसँ मधुलिका बहुत परेसान भए गेलि। जेना-तेना ओ पुलिस लाइन पहुँचलि । ओतए पहुँचि देखैत अछि जे रविकान्त आ अभय पहिनेसँ ओहिठाम पहुँचल अछि ।

पुलिस लाइनमे ओकरासभकेँ किछु नहि भेटलैक । पुलिससभसँ पता लगलैक जे रूपलालक संबंधीसभ आएल छलाह। ओएहसभ हुनकर लास लए गेलाह । तकरबाद ओ सभ आश्रम वापस आबि गेल ।

रातिमे जखन मधुलिका सुतल रहए तँ ओकरा बाबा सपना देलखिन-

“तोरा हम आश्रमसँ अबैत काल यंत्र देने रहिअह। ओकरा सम्हारि कए रखिअह । ओएह तोहर रच्छा करतह।”

“से किएक? हमरा की भेल अछि जे अहाँ एतेक चिंतत छी? ”

“सभटा बात नहि कहल जा सकैत अछि । जे कहि रहल छिअह ततबा ध्यानसँ सुनह ।”

“जखन अहाँ हमर चिंता करिते छी तखन हमरा कथीक डर? ”

“हम बहुत फटकी जा रहल छी ।”

“तँ हमरो लेले चलू । हमहु ओतहि रहब ।”

“से संभव नहि अछि ।”

“अहाँक लेल सभकिछु संभव अछि । अहाँ हमरा ठकु नहि।”

“तूँसभ आश्रम छोड़ि दएह । -से कहि बाबा बिला गेलाह।”

तकरबाद मधुलिकाक निन्न टुटि गेलनि । कतहु किछु नहि छल । फरीछ भए गेल छल । ओ ओसारापर आबि गेल ।

रविकान्त आ अभय पहिनेसँ ओतहि बैसल रहथि ।

"की बात छैक? एतेक भोरे अहाँसभ किएक उठि गेलहुँ?"

"रातिमे निन्न नहि भेल । भरि राति जगले छी । रविकान्त बाजल। अभय सेहो रातिभरि जगले रहए ।"

आश्रममे रविकान्त आ अभयक कोठरी सटले रहए । अर्द्धरातिमे रविकान्त उठल आ मधुलिकाक कोठरी दिस बिदा भेल। कोठरीक केबार बंद रहैक । मुदा ओकर खिड़की थोड़ेक खुजल छल । अंदर पलंगपर मधुलिका एसगरि सुतल छलि । कोठरीमे जरैत लालटेनक इजोतमे मधुलिकाकेँ देखबाक ओ भरिसक प्रयास कए रहल छल। अभय सेहो जगले रहए । रविकान्तक कोठरीमे जखने खट-खुट भेलैक ,ओहो अपन कोठरीसँ बाहर भेल । ताबे रविकान्त मधुलिकाक खिड़की लग पहुँचि गेल छल । अभय ओकरा खिड़की लग ठाढ़ देखि तामससँ छटपट कए रहल छल । ओ रविकान्तक पाछामे जा कए ठाढ़ भए गेल । मुदा रविकान्त किछु नहि बूझि सकल । कैकबेर जखन मधुलिका करोट बदलैत छलि तँ रविकान्तकेँ निराशा होइक । तथापि ओ टस सँ मस नहि होअए । एहीसभमे दुनूगोटे राति भरि लागल रहए ।

तीनूगोटे अहिना किछु-किछु गप्प करैत रहथि कि बड़ी जोरक अन्हर आएल । चारूकात पानिए-पानि भरि गेल छल ।

लागि रहल छल जेना महाप्रलय भए गेल हो । थोड़बे काल में रेडिओपर घोषणा होबए लागल-

“निर्मली लग कोशीक बांध टुटि जेबाक कारण समस्त कोशी अंचलमे महाप्रलयक दृश्य पसरि गेल अछि । लाखों लोक अपन-अपन घर छोड़ि यत्र-तत्र भागि रहल छथि । जेम्हरे जाइत छथि,तेम्हरे महाप्रलय देखा रहल छनि। ककरो वशमे किछु नहि रहि गेल छैक ।”

आश्रमक लग-पासमे देखिते-देखिते प्रलयक दृश्य भए गेल। आश्रमक चार से हहरि रहल छल । करवनो खसि सकैत छल। तीनूगोटे जान बचा कए बाहर भगलाह ।

कतहु केओ नहि देखा रहल छल । प्राण संकट देखि तीनूगोटे अपसियाँत छल कि देखैत अछि जे एकटा नाओ ओकरेसभ दिस आबि रहल छल । नाओ लगीच अबैत गेल । मधुलिका मोने-मोन सोचैत अछि-

घटबार तँ देखल-सुनल लोक लागि रहल छथि । एहन बिकट समयमे ओ एना निधोख नाओ कोना चला रहल अछि? ओ मोने-मोन सोचि रहल छलि कि घटबार चिकरल-

“मधुलिका !मधुलिका!”

“अहाँ के छी? एहन हालतिमे एहिठाम की कए रहल छी?”

“हम डमरुबाबाक आदेशपर अहाँसभकेँ लेबए आएल छी।”

“मुदा हम से कोना सही मानि लिअ? ”

“बेसी दुविधामे नहि पड़ू । ई अहाँसभकेँ बचबाक अंतिम अवसर अछि । जौं चुकि गेलहुँ तँ गेल घर छी ।”

मधुलिका अभय आ रविकान्त दिस देखलथि । ओ दुनूगोटे तँ पहिनेसँ तैयार रहथि । मधुलिकाक इसारा पबितहि सभगोटे नाओमे बैसि गेलाह । औ बाबू! तकर बाद जे नाओ गति पकड़लक से की कहू? देखिते-देखिते ओसभ एकटा निर्जन वनमे पहुँचि गेलाह ।

घटबार अभय,रविकान्त आ मधुलिकाकेँ नाओसँ उतारि देलक । तीनूगोटे जंगले-जंगल बड़ीकाल धरि चलैत रहल । तीन-चारि माइल चललाक बाद एकटा आश्रम देखेलैक। ओहि आश्रमक ओसारापर डमरुबाबा डमरु बजा-बजा कए नचारी गाबि रहल छलाह । बाबाकेँ डमरु बजबैत देखि तीनूगोटे आश्वस्त भेलाह ।

२३

मोहिनीसँ झंझटक बाद अजितेश वापस कलकत्ता बिदा भए गेल रहए । मुदा संयोग एहन भेलैक जे पटना टीसनपर ट्रेनमे चढ़ैत काल ओ पिछरि गेल । टीसनपर ओ कनीक देरीसँ पहुँचल छल । ताबे ट्रेन कनी-मनी घुसकए लागल छल । ओ दौरि कए ट्रेनमे चढ़बाक प्रयास केलक । मुदा हैंडलकेँ नीकसँ नहि पकड़ि सकल। हाथ छुटि गेलैक आ ओ ठामहि रेलवे लाइनपर खसल। चलैत ट्रेनक पहिआ ओकरापर सँ गुजरि गेलैक। एहि तरहें

अजितेशक अकाल मृत्यु भए गेलैक । ओकर मृत्युक कोनो जानकारी मोहिनीकेँ नहि भेटि सकलैक । अजितेशक लास लवारिस कैकदिन धरि रेलवे अस्पतालमे पड़ल रहल । अजितेशक आत्मा तहिएसँ भटकि रहल छैक ।

एहि तरहें भटकैत आत्मा ओ असगर नहि छल । एहन कतेको आत्मासभ मुक्तिक हेतु भटकि रहल छलाह,छटपटा रहल छलाह । ओकरसभक दुर्दशा देखि डमरु बाबा बहुत दुखी रहैत छलाह ।

मधुलिका,अभय आ रविकान्तकेँ अनबाक हेतु बाबा अजितेशकेँ पठओने रहथि । मुदा घुरतीमे रूपलाल सेहो ओकरसंग लागि गेल । ओ सभ बाबा लगसँ हटबे नहि करए । ओकरासभकेँ एहि हालतमे देखि बाबा बहुत दुखी रहथि ।

२४

बाबाक आदेशक पालन करैत अजितेश आ रूपलाल प्रयाग पहुँचलाह। ओतए माघमेला दू दिन पहिने शुरु भेल छल। लाखो सामिआनासभ सौंसे मेला क्षेत्रमे गारल छल । पंडासभ तरह-तरहक झंडा टंगने छलाह जाहिसँ हुनकर जजमानसभ भुतलाथि नहि,सोझे हुनका ओहिठाम पहुँचि जाथि । जे जेहन चाहथि,जिनकर जेहन सामर्थ्य रहनि ताहि हिसाबे हुनकरसभक माघमेलामे रहबाक व्यवस्था पंडासभ करैत छलाह । कतेकोगोटे

अपन स्वतंत्र सामिआना गारने रहथि । हुनकासभकेँ सेहो यथासाध्य पंडा लोकनि मदति करथि । जखन ओसभ माघमेला पहुँचल रहथि तँ भोरुकबा उगि रहल छल । माघमेलामे लोकसभ स्नान करबाक हेतु जा रहल छलाह । केओ स्नान केलाक बाद पूजा-पाठमे लागल छलाह । चारूकात तरह-तरहक कीर्तन भए रहल छल । ओहिठामक माहौल देखि कए ओसभ अतिशय प्रसन्न भेलाह। हुनकासभकेँ विश्वास भए गेलनि जे एतहि हुनकर सभक कल्याण होएत।

सूर्योदयक लालिमा चारूकात पसरि रहल छल । संगमपर नाओसभ तीर्थयात्री लोकनिकेँ संगमस्नान हेतु लए जा रहल छल । कतेको यात्रीसभ स्नान कए वापस घाटपर जा रहल छलाह । तहने समयमे ओ सभ संगम पहुँचलाह । बाबा ठीके कहने रहथिन । संगमपर पहुँचतहि ओसभ ओतहि बैसल बगुलासभमे पैसि गेलाह। आब तँ हुनकासभक प्रसन्नताक अंते नहि छल । रहि-रहि कए तीर्थयात्रीसभ संगममे बगुलासभक हेतु अन्न छीटैत छलाह । जहाँ केओ किछु छीटैत की ओसभ सभटा खा जाथि। आन बगुलासभ मुँहे तकैत रहि जाइत छल । ओकरासभकेँ बुझेबे नहि करैक जे बात की छैक, ई बगुलासभ कतएसँ आबि गेल? ।

बहुत दिनक बाद ओसभ भरिपेट भोजन केलक । मोनमे भितरिआ आनंद लागि रहल छलैक । होइ जे की करी,की नहि। ओसभ माघमेला क्षेत्रमे उड़ए लागल । किछु आओर बगुलासभ सेहो संग भए गेल । तरह-तरहक लोक,

ढ़ोल,झालि,हरमुनिआ बजबैत, भजन कीर्तन करैत, कथा कहैत महात्मासभकेँ देखि-सुनि ओ सभ छगुन्तामे रहए ।

“सएह कहू, ईसभ केहन-केहन टाटक केने अछि? ”

“टाटक नहि करतैक तँ केओ पुछबो करतैक ।”

बात तँ ठीके कहि रहल छह । ईसभ कीर्तन तँ नाम लेल करैत अछि, सौंसे ध्यान तँ टाकापर रहैत छैक।”

“टाका तँ मामूली बात भेलैक । ओमहर देखहक । की-की खेला भए रहल छैक? ”

“की भए रहल छैक, से फरिछा कए बजैत किएक नहि छह? ”

“देखैत नहि छहक जे ठरका चानन लगओने जवान महात्मासभ छौंड़ीसभ लग केना नुरिआइत अछि।”

“की करतैक, ओहोसभ तँ मनुक्खे छैक । ओकरोसभकेँ तँ मोनमे लालसा होइते हेतैक ।”

“से बात तँ बुझलहुँ, मुदा ताहि हेतु ईसभ करबाक कोन काज? ”

“छोड़ह ई बातसभ । अपनसभक जाहिसँ कल्याण होएत से बात करह ।”

“ओसभ आपसमे गप्पो करैत छल आ मेला सेहो देखैत छल ।”

मेलामे घुमैत-घुमैत माछक निसानबला झंडा देखेलैक कि एकटा बगुला चिचिआ उठल-

“भेटि गेल, भेटि गेल ।”

“की भेटि गेलह? ”

“माछक निसानबला झंडा ।”

“एहिसँ की होइत छैक ।”

“तोरा कहिआ बुद्धि भेलह जे आब भए जेतह । माछक निसान मिथिलाक पहिचान अछि । अपना ओहिठामक लोकसभ एही लग-पासमे हेताह ।”

“ई तँ बड़का गप्प कहलह ।”

की विचार? ओमहरे चलल जाए की? की पता किछु अपन परिचित लोक भेटिए जाथि ।”

“ठीक छैक । ओमहरे चलल जाए ।”

सभगोटे माछक झंडा लग पहुँचलाह । माघमेलामे माछक निसानबला झंडाक लग-पासमे ओसभ बड़ीकाल उड़ैत रहल । अपनाभरि लोकसभकेँ अखिआसति रहल।

“की पता, केओ परिचित भेटि जाथि? ” -ओसभ मोने-मोन सोचए ।

उड़ैत-उड़ैत ओसभ पीअर रंगक इस्तिहार देखलक । ओहिपर बड़का-बड़का आखरमे लिखल छल-प्रगतिपथ' । बगुलासभ कनी नीचा भेल । आब ओकरासभकेँ आओर फरिछाएल देखा रहल छलैक ।

“ई सभ तँ रविकान्तक संगीसभ बूझा रहल अछि? ”

“तोरा तँ एहिना भ्रम होइत रहैत छह? ओसभ माघमेला मे की करए आओत? ”

“कहैत छिअह जे ओएह सभ अछि ।”

बातकेँ परिछाबक हेतु ओसभ आओर नीचा भेल ।

“ठीके कहैत छह । ईसभ तँ रविकान्तेक संगे घुमैत रहैत छल ।”

आखिर ओकरासभकेँ नहि रहल गेलैक । ओसभ नीचा उतरि गेल ।

माघमेलामे प्रगतिपथक इस्तिहार लागल मंडपपर ओ सभ पहुँचल । ओहिठाम पहुँचतहि ओकरासभक प्रसन्नताक अंत नहि छलैक । ओकरसभक पूर्वपरिचित कैकगोटे ओतए एकहिठाम विद्यमान छल । केओ तरकारी काटि रहल छल तँ केओ अल्लुक सन्ना बना रहल छल । ओकरासभकेँ सभसँ बेसी छगुन्ता एहिबातसँ भेलैक जे एहनो मेलामे ओ सभ तिलकौरक तरुआक जोगार कए लेने छल । सामिआना तँ भोजन सामग्रीसँ भरल छल। बासमतीक चुरा, अथरा-अथरा दही देखि कए ओकरोसभक मुँहमे पानि आबि गेलैक । मुदा एहि बातसँ बहुत अफसोच भेलैक जे ओ सभ एहि वस्तुसभक स्वाद नहि लए सकैत अछि । सामिआनाक लगपासमे बगुला देखि सभ छगुंतामे रहए । बीचमेलामे ई बगुलासभ कोना पहुँचि गेल? मुदा ओ सभ कोनो बगुला थोड़े छल। सभसँ छगुंता तँ ओहिठाम बैसल लोकसभक वस्त्रसँ लगलैक । ओ सभ बाबाजी जकाँ ढब बनओने छल ।

“हौ! सुनैत छलिऐक जे ई सभ समाज कल्याणमे लागल अछि मुदा एहिठाम तँ दोसरे बात देखि रहल छी।”

“से की? ”

“देखैत नहि छहक जे सभगोटे कोना बाबाजीक ढब धए लेने छैक?”

“एतबो नहि बूझि रहल छहक तँ की बुझबह? माघमेलामे बाबाजीसभक चलती रहैत छैक । तरह-तरहक भक्तसभ आगु-पाछु घुमैत रहैत छैक । एक सँ एक सेठसभ दान करबाक हेतु औनाइत रहैत छैक । ओकरासभ लग सुपात्र बनि कए ठाढ़ हेबाक देरी रहैत अछि ।”

“से बात तूँ सही कहि रहल छह । सामिआनामे राखल चीज-वस्तुसभ एकर प्रत्यक्ष प्रमाण थिक ।”

“मेलाक हालत देखि इहोसभ सोचने होएत जे किछु सुख कए ली। आगा के देखलक अछि?”

बगुलासभकेँ आपसमे गलगलाइत देखि सामिआनामे बैसल लोकसभ साकंक्ष भेल।

“बीच मेलामे बगुलासभ कोना आबि गेल? ”

“आबिए टा नहि गेल, अपनेसभक सामिआनाक लग-पासमे कहि नहि कखनसँ बौआ रहल अछि ।”

“हम तँ एकरासभकेँ मनुक्खे जकाँ गप्प करैत सुनने छलिएक ।”

ओसभ आपसमे गप्प करैत छल । एहि तरहें ओकरासभकेँ साकंक्ष होइत देखि बगुलासभ इएह-ले ओएह-ले ओहिठामसँ भागि गेल ।

माघमेलामे घुमैत-घुमैत बगुलासभ थाकि गेल छल । भूख सेहो लागि गेल रहैक । हनुमान मंदिर लग जाए पर्याप्त भोजन करैत गेल आ ओतहि सुति रहल । तकर बाद जे सुतल से एके निन्ने भोर भए गेलैक । भोरे जखन निन्न टुटलैक तँ चारूकात पूजा-पाठ भए रहल छल , भजन-कीर्तन भए रहल छल । बगुलासभ माघमेलामे घुमए लागल । एकाएक ककरो नजरि मेलामे टांगल डमरुपर पड़लैक ।

“एतेकटा डमरु नहि देखने रहिऐक ।”

“कहीं डमरु बाबा तँ नहि छथि? ”

“ओ तँ जंगलबला आश्रममे छलाह । एहिठाम कोना हेताह?”

“से चलि कए देखिए किएक नहि लैत छह ।”

“ठीके कहि रहल छह ।”

बगुलासभ आपसमे गप्प करैत छल ।

बड़काटा त्रिशुलमे टांगल डमरुकेँ देखैत ओसभ एकटा खोपड़ी लग पहुँचल । ओहिठाम चारूकात बालु भरल छल । लगेमे गंगाजी बहैत छलीह । मचानक चारूकात भक्तलोकनि भजन-कीर्तन कए रहल छलाह । कोनपर किताबक ढ़ेरी छल । जे आबए से पहिने किताब कीनए । एहि तरहें सभ गोटे भजन-कीर्तन करैत बाबाक प्रतीक्षा कए रहल छल । बाबा खोपड़ीमे

ध्यानस्त छलाह । बगुलासभ सेहो खोपड़ी लग पहुँचि गेल । ओहिठाम रविकान्त,अभय आ मधुलिका सेहो देखेलैक । मुदा ओ सभ बगुलासभकेँ नहि चिन्हि सकलैक? चिन्हबो केना करितैक?कनीकालक बाद बाबा खोपड़ीसँ बाहर भेलाह ।

"देखलहक कि नहि?"

"कथी देखबैक?"

"ई डमरु बाबा छथि ।"

"हमरा तँ से नहि बुझा रहल अछि । डमरु बाबाक माथमे एतेक जटा नहि छनि ।"

"तोहर माथा भसकि रहल छह ।" ताबे बाबा किछु बजलाह । भक्तसभकेँ किछु कहलखिन ।

"हुनकर आबाज तँ साफे डमरु बाबाक अछि ।"

"सही कहि रहल छह ।"

बगुलासभ अपनामे गप्प-सप्प करए ।

डमरु बाबा एकटा अद्भुत व्यक्ति छलाह । हुनका भूत,वर्तमान आ भविष्यक ज्ञान रहैत छलनि। ओ कैक पुस्तक संगे जिबि चुकल छलाह आ कहि नहि आगा कतेक पुस्त देखताह । हुनका कोनो बातसँ आश्चर्य नहि होइत छलनि । ओ सभसाल माघमेलामे अबैत छलाह। मुदा हुनकर दर्शन कम लोककेँ होइत छलैक । एक तँ हुनकर खोपड़ी एकदम कातमे रहैत छल,दोसर ओ बेसीकाल अपनेमे रमल रहैत छलाह ।

जखन माघमेला घुमि कए बगुलाक भेषमे प्रेतात्मासभ बाबा लग पहुँचल तँ हुनका ओकरसभक हालत देखि बहुत दुख भेलनि ।

"कहि नहि ई सभ एतेक कष्ट किएक भोगि रहल अछि?"-बाबा मोने-मोन सोचथि । आखिर बाबा इसारासँ बगुलासभकेँ खोपड़ीमे बजओलखिन । बाबाक इसारा पबितहि बगुलासभ हुनकर मचानपर चढ़ि गेल । बाबा ओकरासभकेँ अंदर लेने चलि गेलखिन। तकरबाद की भेलैक की नहि, ओसभ बाहर नहि आएल। लोकसभ बजैक जे बगुलासभ बाबाक कृपासँ स्वर्ग चलि गेल।

२५

माघमेलामे थोड़बे कालक बाद वर्षा होबए लगलैक । देखिते-देखिते चारूकात पानि भरि गेल । बाबाक खोपड़ी गंगाक कातमे छल । तँ ओहिठाम धरि पानि आबि गेलैक । देखिते-देखिते ओहिठाम उपस्थित भक्तसभ यत्र-तत्र भागि गेल । मुदा रविकान्त,अभय आ मधुलिका एहनो हालतमे ओतहि रहि गेल। पानिक स्तर निरंतर बढ़िते जा रहल छल । ओकरसभक हालत देखि बाबा बहुत परेसान भए गेलाह ।

बाबाक इसारा पबितहि तीनूगोटे मचानपर चढ़ि गेल। चढ़ि तँ गेल मुदा थोड़बे कालमे पानि ओतहु पहुँचि गेल । पानिक स्तर बढ़ले जा रहल छलैक । सौंसे दुनिआ परेसान छ ल ,मुदा

बाबाक लेल धन-सन । डमरु बाबा मचानपर समाधिस्त भए गेलाह। हुनका कोनो बातक किछु असर नहि भए रहल छलनि। मुदा तीनूगोटेकेँ मचानपर ठहरब असंभव लागि रहल छलैक । केओ किछु बुझितए,किछु करितए ताहिसँ पहिने मधुलिका मचानपरसँ खसि पड़लि । नीचा अथाह पानि छल । देखिते-देखिते ओ कतए-सँ कतए दहा गेलि । रविकान्त आ अभय चिचिआइत रहि गेलाह।

अभय एकटक गंगाक उफनैत पानिकेँ देखैत रहि गेल । कतहु मधुलिका नहि देखा रहल छलैक । ओकरा नहि रहल गेलैक । ओ जोरसँ चिकरल -

"मधुलिका! मधुलिका!"

मुदा ओकर सभ प्रयास अरण्यरोदने साबित भए रहल छल । माघमेला क्षेत्रमे यत्र-तत्र पानि पसरि गेल छल। के डुबल,के बाँचल तकर कोनो ठेकान नहि । सामिआनासभ धारासायी भए चुकल छल । एतेक जलदीमे एना भए जेतैक से केओ सोचि नहि सकैत छल ।

रविकान्त बाबाकेँ गोहार लगाबक हेतु पाछा घुमल । बाबा नदारद । पाछा घुमैत काल ओकर पैर पिछड़ि गेलैक आ ओ मचानपरसँ नीचा अथाह पानिमे धराम दए खसल । ओकरा खसैत देखि अभय सेहो मचानपरसँ कुदि गेल । अपना भरि ओ रविकान्तकेँ बचेबाक प्रयास केलक । मुदा पानिक प्रबलवेगक आगा ओ बेकाबू भए गेल । भावी प्रबल छल । जे हेबाक छल

से भेल। एहन प्रलयमे के ककरा बचबैत? किछु करब संभव नहि छल ।

पानिमे दहाइत-दहाइत मधुलिका देवनगर लग जा कए अड़कि गेलि । भोरक समय रहैक । लोकसभ प्रातः भ्रमण कए रहल छल । ओहीमेसँ ककरो ध्यान मधुलिकापर गेलैक । ओ सभ मधुलिकाकेँ बाहर अनलक ।

"साँस चलि रहल छैक । मुदा होश नहि छैक ।"

"एकरा तुरंत अस्पताल लए जाएब जरूरी अछि ।"

"मुदा एतेक भोरे कोनो सबारी भेटब मोसकिल अछि ।"

ओ सभ आपसमे गप्प कए रहल छल । ताबते एकटा टैक्सीबला कतहुसँ आएल । ओसभ मधुलिकाकेँ टैक्सीमे रखलक । दूगोटे ओकरासंगे गेलैक। अस्पतालक गेटेपर डाक्टर अनीश भेटि गेलखीन। हुनकर सहयोगसँ मधुलिकाकेँ नीक इलाज भेटि गेलनि । मधुलिकाकेँ अस्पताल अननिहार दुनूगोटे ओकरा अस्पताल पहुँचा कए वापस चलि गेल । आओर केओ मधुलिकाक संगे नहि रहैक । मधुलिकाक डाक्टरी इलाज आ देखभालक सभटा व्यवस्था डाक्टर अनीश केलथि । हुनकर अथक प्रयाससँ मधुलिकाक जान बाँचि गेलनि । मुदा समस्या छल जे आब ओ जाएत कतए?

कोनो आओर विकल्प नहि देखि डाक्टर अनीश मधुलिकाकेँ अपने ओहिठाम नेने चलि गेलाह । घर पहुँचि ओ अपन पत्नीकेँ सभबात कहलखिन । जहिना हुनकर नाम लक्ष्मी छलनि ,तेहने हुनकर स्वभावो रहनि । लक्ष्मी दिन-राति

मधुलिकाक सेवा केलथि । मधुलिकाकेँ लगबे नहि करनि जे ओ कतहु आनठाम आबि गेल छथि ।

डाक्टर अनीश पैंतीस वर्षक रहथि मुदा देखबामे पचीस वर्षसँ बेसी नहि लागथि । ओ देखबा-सुनबामे बेस सुंदर छलाह। जेहने देखबामे सुंदर छलाह तहिना हुनकर स्वभावो बहुत नीक छल। हुनकर तीन मंजिला घर छल। ऊपरक दुनू महल किरायापर लागल छल । भूतलपर ओ स्वयं रहैत छलाह। हुनकासंगे हुनकर पत्नी आ माए रहैत छलखिन । कोनो संतान नहि रहबाक कारण ओसभ कखनो -काल उदास भए जाइत छलाह । एहन हालतमे ओ सभ डमरुबाबाक आश्रम चलि जाथि। ओतए बाबाक सानिध्यमे ओ सभ बहुत प्रसन्न रहथि । हुनकासभकेँ बाबापर अटूट विश्वास रहनि ।

थोड़ेकालक बाद मधुलिकाकेँ होश आबि गेल रहैक । मुदा अज्ञात स्थानपर अपरिचित लोक सभक संगे ओकरा कोनादनि लागि रहल छलैक।

संयोगसँ ओहन विपत्तिक समयमे रविकान्त आ अभयकेँ बाबाक एकटा चेला भेटि गेलखिन । हुनके संगे ओसभ जेना-तेना कुंभमेलासँ जान बचाकए पहुँचल देवनगर । एहिठाम पहुँचितहि ओकरासभकेँ चकबिदोर लागि गेलैक ।

“ई तँ गजबकेँ सुंदर स्थान अछि । हम पहिने एहिठाम किएक नहि आबि सकलहुँ? केओ एहि स्थानक बारेमे किएक नहि कहलक । ई तँ संयोग छल जे बाबाक चेला हमरा सभकेँ

एतए लए अनलनि।"-ओ मोने-मोन सोचि रहल छल कि ताबतेमे एकटा उद्घोषणा सुनलक-

"देवनगरमे अपने लोकनिक स्वागत अछि । देवनगर पवित्र स्थान अछि । भक्त लोकनिक सुख-सुबिधाक संपूर्ण व्यवस्था आश्रमक दिससँ कएल जाइत अछि । एहिलेल ककरोसँ कोनो शुल्क नहि लेल जाइत अछि । कोनो परेसानी भेलापर मुख्यद्वारपर बनल स्वागत कक्षमे संपर्क करबाक चाही।"

"तखन तँ हमसभ सही जगहपर चलि अएलहुँ ।"

आश्रमक अतिथि गृहमे दुनूगोटे रातिभरे निचैन भए सुतलाह । भोरे चाह-पान भेलैक,जलखै भेलैक । रविकान्त आ अभय अतिथिगृहक ओसारापर बैसल गप्प करैत छलाह-

"कहि नहि मधुलिका कोना आ कतए छथि? "

"किएक चिंता करैत छी । बाबा सभक ध्यान रखैत छथिन तँ ओकरा कोना छोड़ि देथिन ।"

"ठीके कहैत छी । बाबा किछु चमत्कार अवश्य करथिन।"

ओ सभ आपसमे गप्प करिते छलाह कि डाक्टर अनीशक संगे मधुलिकाकेँ सामनेसँ जाइत देखलथि।

मधुलिकाकेँ देखि ओकरासभकेँ जतबे प्रसन्नता भेलैक,ओकर संगे अनीशकेँ रहलासँ ओतबे चिंता होबए लगलैक ।

“ई की देखि रहल छी?”

“जे सही छैक, से देखि रहल छी ।”

“मधुलिकाक संगे ई युवक कतएसँ आबि गेल ?

“से तँ मधुलिकाकेँ ने पुछबैक? हमरा की पता ई के अछि आ कतएसँ आएल?”

रविकान्त आ अभय आपसमे गप्प कए रहल छलाह । ताबे मधुलिकाक नजरि ओकरासभपर पड़लैक । मधुलिका अनीशक परिचय करबैत बाजलि -

“ई डाक्टर अनीश छथि । ई डमरुबाबाक परम भक्त छथि । बाबाक आश्रमसँ सटले हिनकर अस्पताल अछि । ओतहि हमरो इलाज भेल जाहिसँ हम आइ जीवित छी ।”

मधुलिकाक बात सुनि कए रविकान्त आ अभयकेँ बहुत प्रसन्नता भेलनि । रविकान्त आ अभय व्यर्थ चिंतित रहथि। मधुलिकासँ अनीशक बारेमे जानि कए ओ सभ आश्वस्त भेलथि।

देवनगरक भीड़सँ कैकबेर तंग भए बाबा भ्रमणमे चलि जाइत छलाह । मुदा हुनका नहिओ रहलापर लोकक आवागमन बनले रहैत छल । बाबा जँ आश्रमसँ निकलि जाथि तखन फेर कहिआ वापस अएताह तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल । मुदा एहिबेर प्रयागमे भेल दुर्घटनाक कारण ओ जलदी वापस आबि गेलाह । बाबाक अएबासँ पहिनहि ओतए भक्त लोकनि भीड़ लागि चुकल छल । भक्त लोकनिक भीड़ देखि बाबा सोझे मचानपर चढ़ि गेलाह ।

अनीशक संगे मधुलिका डमरु बाबा लग पहुँचलि । रविकान्त आ अभय तँ पहिले पाँतिमे बैसल रहए । दुनूगोटे बाबा लग पहुँचल। एकरासभकेँ एतहु देखि डमरुबाबाकेँ हँसी लागि गेलनि । बाबा डमरु बजा देलाह। देखिते-देखिते ओहिठामसँ बहुत रास लोक अदृश्य भए गेल । मधुलिकाकेँ नहि रहल गेलैक। ओ बाबाकेँ पुछिए देलकः

“एखने एहिठाम एतेक लोक छल । आब ककरो नहि देखि रहल छी । ओ सभ कतए चलि गेल?”

“ओ सभ कतहु नहि गेल अछि । मुदा तोरा केओ देखा नहि रहल छह ।”

रविकान्त आ अभयक मोनक बात सेहो बाबा बूझि रहल छलाह। ओकरासभकेँ बाबा इसारासँ अपना लग बजओलाह आ कहलथि-

“तूँसभ व्यर्थ परेसान छह । भविष्यक फिराकमे अपन वर्तमान किएक नष्ट कए रहल छह? सभगोटे अपन-अपन गाम लौटि जाह।”

बाबाक बात मानि ओ सभ गाम बिदा भेल । मुदा मधुलिकाक बिना आगा बढ़ब ओकरासभकेँ मोसकिल लागि रहल छल । तथापि ओसभ रतुका ट्रेन पकड़ि भोरे-भोर दरभंगा पहुँचि गेल । दरभंगा बसस्टैंडपर ओकर गामक बस खुजि रहल छल । संयोगसँ बसमे जगह भेटि गेलैक । ओ सभ थोड़बे कालमे अपन- अपन गाम पहुँचि गेल ।

मोहिनी पटनास्थित अपन घरमे एसगरि रहैत-रहैत बहुत परेसान भए गेलि । कोनो समाधान बुझेबे नहि करैक । एहने समयमे ओकरा लग-पासक लोकसभसँ डमरु बाबाक पता लगलैक । ओ सभ डमरु बाबाक दर्शनक हेतु हुनकर देवनगर स्थित आश्रमपर जाइत रहए। मोहिनी घरमे ताला ठोकलक आ बाबाक देवनगर स्थित आश्रमक हेतु बिदा भए गेलि।

बाबा मधुलिकाकेँ सभसँ पाछु बैसल एकटा बृद्धा दिस इसारा केलनि । मोहिनीक हालत तेहन छल जे मधुलिका ओकरा नहि चिन्हि सकलि । बाबाकेँ हँसी लागि गेलनि ।

“ओ तोहर माए मोहिनी छथुन ।”

“ओ एहिठाम केना आबि गेलि? ”

“से हमरा की पुछि रहल छह? हुनके किएक नहि पुछैत छहुन?”

बाबाक इसारा देखि मोहिनी बाबा लग अगिला पाँतिमे आबि गेलि । मधुलिकाकेँ देखितहि मोहिनी ठोह पारि कए कानए लागलि। माएक एहन हालत देखि मधुलिका बहुत दुखी भए गेलि। ताबतेमे अनीश ओतए पहुँचि गेल । अनीश मधुलिका आ ओकर माएकेँ अपन घर लए अनलक । रातिभरि अनीस सपरिवार दुनूगोटेक बहुत सेवा केलक। मोहिनीकेँ बहुत दिनक बाद लगलैक जेना ओ अपने घरमे हो। रातिभरि लक्ष्मी ओकरासभसँ गप्प-सप्प करैत रहि गेलि। प्रातभेने स्नान-भोजन केलाक बाद मधुलिका मोहिनीक संगे पटना बिदा भए गेलि । अनीश आ लक्ष्मी अपना भरि बहुत आग्रह केलकैक । मोहिनीक स्वास्थ्य ठीक नहि छलैक। ओकरासभक इच्छा रहैक जे दुनूगोटे थोड़ेदिन ओतहि रहि जाइत तँ मोहिनीक इलाजमे सुबिधा होइतैक । मुदा मोहिनीकेँ उचाट भए गेल रहैक । ओ जलदी सँ जलदी पटना वापस होबए चाहैत छल । अनीश आ लक्ष्मी ओकरासभकेँ बसस्टैंड धरि अरिआति देलकैक। मधुलिका कृतज्ञताक भावसँ अनीश आ ओकर परिवारकेँ देखैत रहल । किछु-किछु सोचैत रहल । ताबतेमे बस खुजि गेल ।

२७

मधुलिका मोहिनीक संगे पटना पहुँचि गेलि । ओतए घरक दयनीय स्थिति देखि ओ बहुत दुखी भेलि । देबालपर टांगल घड़ी कहि नहि कहिआसँ रातुक तीन बजा रहल छल ।

घरक चीज-वस्तु यत्र-तत्र ढ़नमानएल खसल-पड़ल छल । देबालसभक पपड़ी झरि रहल छल । खिड़की-केबारपरसँ पर्दासभ फाटि गेल छल । एहन बेपर्द घरमे पैर रखितहि मधुलिकाक माथामे घुरमी उठि गेलैक। एहि बीच ओकर माए मोहिनी कहि नहि कोना समय कटलक? एतेकटा सहरमे असगरि रहैत छलि। अछैते लोक केओ संग देनिहार नहि रहैक । बहुत दिनक बाद एकबेर फेर एहन समय अएलैक जे मधुलिका ओकरा संगे रहैक,मुदा नामेक लेल । बेसक ओकर देह माएक लग रहैत छलैक मुदा मोन सदिखन बौआइति रहैत छलैक । जखन डमरु बाबा किछु नहि कए सकलाह,ओकर मानसिक अशांति जहिनाक तहिना रहि गेल तँ आओर ककरा वशक बात रहैक जे ओकर मोनक थाह लए सकैत । मधुलिका संगे केओ नहि रहैक। मधुलिका नितांत असगरि छलि । ओकरा सदिखन गुनधुनमे देखि एकदिन मोहिनी पुछलकै-

“तूँ जहिआसँ वापस पटना हमरा संगे रहए अएलह तहिआसँ कहिओ हँसैत नहि देखलिअह ।”

“से हम की करू । जबरदस्ती हँसल नहि जा सकैत अछि।”

मधुलिका एकतरफा कहि नहि की-की बजैत रहलि?मोहिनी किछु नहि बाजलि । माए-बेटीक बिबादकेँ रोकैत के? ओहिठाम केओ तेसर केओ छल नहि । अपने ओसभ बेकाबू भए गेल छलि । असलमे बहुतदिनसँ ओकरसभक दबल भावनाक विस्फोट भए गेल । ओहिमे के ककरा सम्हारैत? मधुलिका कोठरीमे जा कए बंद भए गेलि । हुनकर आँखिसँ

बहुत राति धरि नोर बहैत रहलनि । कहि नहि ओ करवन भुखले पेटे सुति रहलीह । ओमहर मोहिनी ओहनोमे भोजन बनओलीह। मधुलिकाकेँ उठेबाक बहुत प्रयास केलीह । मुदा ओ नहि ऊठलीह ।

मोहिनी बहुत परेसान छलि । मधुलिकाक बाट तकैत-तकैत ओ थाकि गेलि छलि । ओ ककरा की कहितैक? ककरा की पुछितैक? एसगरि उदास चौकीपर पड़ि सुतबाक उपक्रम केलक कि बड़ी जोरसँ माथमे दर्द भेलैक, लगलैक जेना माथ फाटि जेतैक । ओ ठामहि टगि गेलि।

भोरे जखन मोहिनी उठलीह तँ ठोकले माएक कोठरीमे गेलि । मोहिनीक हाल देखि हुनका बुझबामे देरी नहि भेलनि । ओ हाकरोस करए लगलीह । मुदा आब छाती पिटलासँ की ? मोहिनी भूत,वर्तमान आ भविष्यक झंझटसँ मुक्त भए गेल छलि। ओकर निष्प्राण शरीर चौकीपर पड़ल छल । मोहिनीक लास देखि कनिको नहि लगैत छल जे ओ आब जीवित नहि अछि । लगैक जेना ओ किछु कहए चाहैत अछि,जेना अखनो ककरो बजा रहल अछि ।

माएक ई हाल देखि मधुलिका एकटक देखैत रहलि जेना ओ ओकर बजबाक प्रतीक्षा कए रहल छलि। मुदा से कतहु होइ? ओकरा लगैक जेना मोहिनीक दुर्दशाक हेतु ओ जिम्मेबार अछि। ने ओ माएसँ फराक होइत ने ओकर ई हाल होइतैक। मुदा आब पछतेलासँ की होबए बला छल? मधुलिकाक मोन अपराधबोधसँ भरल छलैक। सोचैत-सोचैत ओकरा लगलैक जेना माथा फाटि जाएत । ओ चिचिआएलि -

“माए! माए! "

ओकर स्वरमे पीड़ा भरल छलैक । ओकर कानब सुनि लग-पासक लोकसभ दौड़ल। थोड़बे कालमे ओहिठाम लोकक करमान लागि गेल । ओकर करुण क्रंदन केना-ने-केना डमरु बाबा सेहो सुनलनि। बाबाकेँ नहि रहल गेलनि । ओ तुरंत ओहिठाम उपस्थित भए गेलाह । बाबाक ओहिठाम पहुँचतहि चारूकातक माहौल बदलि गेल । हुनकर आगमनसँ मधुलिकाकेँ बहुत उसास भेलैक। डमरु बाबाक उपस्थितिमे मधुलिका अपन माएक अंतिम संस्कार केलक । तकर बाद श्राद्ध विधिपूर्वक संपन्न भेल ।

“हम सन्यासी छी । हमरा एहिसभसँ बेसी मोह उचित नहि। ई सभ तँ होइते रहत ।” -बाबा मोने-मोन सोचथि । अस्तु, ओ ओहिठामसँ प्रस्थान करबाक जोगारमे लागि गेलाह ।

“हम आब चलब ।”

“हमरा एना एकसरि छोड़िकए कोना जाएब?”

“तूँ चिंता किएक कए रहल छह । समय सभ समस्याक समाधान कए दैत अछि ।”-से कहि बाबा आगा बढ़ि गेलाह ।

२८

बहुत दिनधरि केओ मधुलिकाक हाल-चाल लेबए घुरि कए पटना नहि आएल । डमरु बाबा मोहिनीक श्राद्धक बाद जे गेलाह से कहि नहि कतए बिला गेलाह? केओ-केओ बाजए जे ओ ब्रह्मलीन भए गेलाह । रहि गेलि मधुलिका । असगरि पटनाक घरमे माएक फोटो देखैत रहैत छलि । ककरो ओकरासँ कोनो मतलब नहि रहि गेल रहैक । दिन-राति एकाकी जीवन बितबैत- बितबैत ओकर माथ बेकाबू होइत गेल। एकदिन अहल भोरे ओ घरसँ भागलि । प्रातः काल टहलि रहल कैकगोटे ओकरा रस्तापर देखलक मुदा केओ कोनो जिज्ञासा नहि केलक । ओ पटना रेलवे टीसनपर पहुँचलि । प्लेटफार्म नम्बर एकपर काशी जा रहल ट्रेन ठाढ़ छल। मधुलिका ट्रेनमे पैसिए रहल छलि कि एकटा परिचित आबाज सुनेलैक ।

"ई तँ रविकान्त बूझा रहल अछि ।"

ओ पाछा घुमैत अछि तँ सहीमे रविकान्तेकेँ देखलक ।

"असगरि कतए जा रहल छी? "

"कहि नहि सकैत छी।"

"किछु तँ सोचि कए बिदा भेल होएब? "

"घरमे बैसल-बैसल मोन अगुता गेल । केओ कतहुसँ हालो-चाल पुछनाहर नहि । एहन परिस्थितिमे की करितहुँ?"

“से किएक? अहाँक माए तँ संगे रहथि ।”

“ओहो सभ दिनक हेतु हमरा छोड़ि गेलीह ।”-से कहि मधुलिकाक आँखि नोरसँ भरि गेलैक ।

“हमरा से नहि बूझल छल ।”

“जहन संपर्के नहि रखने छी तँ समाचार केना बुझबैक?”

“से बात नहि छैक। गाम गेलाक बाद हम प्रगतिपथक काजमे लागि गेलहुँ । ओकर कार्यकर्तासभ निष्कृय भए गेल छल । ओकरा फेरसँ ठाढ़ करबामे बहुत समय लागि गेल ।”

“आ अभय कतए अछि?”

“ओकर पिता शिलासँ बिआह ठीक कए देने रहथिन । बिआहक सभ व्यवस्था भए गेल छल । मुदा हमहीसभ विघ्न कए देने रहिऐक। बहुतदिनक बात जखन ओ गाम पहुँचल तँ सौंसे गाम ओकर पाछा पड़ि गेलैक । ओ तैओ नहि मानि रहल छल। मुदा समाज ओकरा मजबूर कए देलकैक । आखिर ओकर शिलासँ बिआह करए पड़लैक ।

“मुदा अभय तँ एहि बातक कहिओ चर्च नहि केलक? ”

“की चर्च करितए?”

“ओकरा कनिको हमर विचार नहि भेलैक?”

“भेलैक कोना नहि? ”

“एकरा कहबैक विचार होएब? ”

“बिआह तँ भेलैक मुदा....”

“मुदा की?

“ओकरा चतुर्थी रातिमे केओ दूधमे जहर मिला कए पीआ देलकैक। जहर बहुत असरदार छलैक । दूपहर रातिक समय छल । गाममे कोनो सबारी नहि भेटलैक । हारि कए एकगोटे अपन मोटर साइकलपर बैसलाह । बीचमे अभयकेँ बेहोशीक हालतमे राखल गेलैक। पाछासँ दोसर गोटे ओकरा पकड़ने छलाह । दुनूगोटे ओकरा जेना-तेना अस्पताल लए गेलाह । मुदा अस्पताल जाइत-जाइत ओकर मृत्यु भए गेलैक।”

“ई तँ बहुत दुखक बात भेल । एहन काज केलक के? ”

“की कहल जा सकैत अछि? तरह-तरहक चर्चा गाममे सुनबामे अएलैक । अखनो धरि थाना पुलिस भइए रहल अछि।”

“तकरबाद की भेलैक? ”

“कहि नहि सकैत छी कारण हम तँ एमहर चलि अएलहुँ।”

“मुदा ई घटना भेलैक कहिआ? ”

“मास दिनसँ ऊपरे भेल हेतैक ।”

मधुलिकाकेँ अभयक समाचार सुनि बहुत कष्ट भेलैक ।

“आश्चर्यक बात थिक जे एतेक भारी दुर्घटना भए गेल आ पुलिस ककरो पकड़ि नहि सकल?”-मधुलिका बाजलि।

“अहाँकेँ ग्रामीण समाजक परिस्थिति नहि बूझल अछि। ओहिठाम केओ ककरो तरवने मदति करैत छैक जखन ओकरासँ

किछु फएदाक संभावना होइक । अभय जीबथु कि मरथु ताहिसँ लोककेँ कोनो मतलब नहि छैक । ओ अबल छलाह तैँ ने हुनका जबरदस्ती केलकनि । कोनो बलगर आदमीक संगे एना भेल रहितैक तँ देखतिऐक की हाल भेल रहितैक । अखन धरि पुलिस जरूर ककरो -ने-ककरो जहल पठा चुकल रहथि ।"

"से की? "

"अहाँ बाते नहि बूझि रहल छी । जखन कोनो मामिलामे धखगर लोक पड़ि जाइत छैक तखन पुलसोकेँ तँ अपन नौकरी बचेबाक रहैत छैक । जे गरीब-गुरबा भेटल ओकरा अपराधी घोषित कए देलक आ अखबारमे छपि गेल -अपराधी पकड़ल गेल । कैकबेर तँ पुलिसकेँ इनामो भेटि जाइत छैक ।"

"मुदा अभयक संग तँ बहुत अन्याय भेलैक ।"

"से तँ भेलैक मुदा कएल की जाए? सौंसे गाम एक भए गेल छैक। पुलिसमे ओकरा मदति केनहार एकटा गबाह नहि छैक । मोकदमा चलतैक कथी पर? "

"हमरा अखन थाना जेबाक इच्छा भए रहल अछि ।"

"ओ कोनो सहरक थाना नहि छैक जे सभ सुबिधा भेटि जाएत। ओहिठाम गेलासँ बात उल्टो पड़ि सकैत अछि ।"

"जे हेतैक, से हेतैक मुदा हम तँ एकबेर ओहिठाम जेबे करब । अहाँकेँ जे मोन होअए से करू ।"

"जहन अहाँ जाएब तँ हमहु जेबे करब ।"

“तँ देरी नहि करू । हमरा मोन बेचैन अछि । एकबेर अपनेसँ सभकिछु देखि लेबैक तँ भए सकैत अछि जे संतोख भए जाए।”

२९

मधुलिकाक संगे रविकान्त थाना पहुँचलाह । बसपर फटकिएसँ थानाक पिअरका देबाल देखा रहल छल । आगुमे बेस ऊचगर सूचनापट्ट पर लिखल छल-थाना-आदिपुरा(ग्रामीण)। बस थानामोर लग पहुँचतहि बस परिचालक चिचिआ कए यात्रीलोकनिकेँ सतर्क केलक-“थानामोड़-थानामोड़” । एकरबाद बस सोझे स्टैंडपर रुकत। दुनूगोटे थानामोरपर बससँ उतरि सोझे थाना पहुँचलाह। थानाक गेटेपर एकटा मोछिअल पुलिस बंदुक लेने ठाढ़ छल । पहिने तँ ओ मधुलिकाकेँ देखैत रहल। तकरबाद जखन ओकरा होश अएलैक तँ एकाएक चिचिआ ऊठल-“खबरदार! तूँ सभ आगा नहि बढ़ह ।”

“हमरालोकनिकेँ दरोगाजीसँ भेंट करबाक अछि ।”

“दरोगाजी बाहर गेल छथि । आइ हुनकासँ भेंट नहि भए सकैत अछि ।”

“केओ तँ हेतैक थानाक प्रभारी? हुनकेसँ भेंट कए लेब।”

“मामिला की छैक से तँ बाजह?”

“तोरा कहलासँ की फएदा होएत? जकरा कहबाक अछि ओहिठाम जा रहल छी ।”

“तखन तँ भए गेलह काज । दुनूगोटे आगा बढ़बाक कोशिश केलक कि सिपाही रविकान्तक गट्टा धेलक।” रविकान्तो चिचिआएल । हल्ला सुनि दरोगाजी बाहर भेलाह ।”

“कथीक हल्ला भए रहल अछि? ”

“सर! ई सभ अहाँकेँ गारि पढ़ि रहल छल । हम रोकलिऐक तँ उल्टे हमरे फज्जति करए लागल । हमरा तामस भए गेल । हम किछु करी ताहिसँ पहिने ई हमर गट्टा पकड़ि लेलक ।”

“साफे झूठ बाजि रहल अछि ई पुलिस ।”

“चुप रहह । सच आ झूठक निर्णय करएबला तूँ के? ” -पुलिस बाजल ।

ताबे दरोगाजीक ध्यान मधुलिका दिस गेलनि। ओ बड़ीकाल धरि ओकरा देखिते रहि गेलाह। किछुकालक बाद दरोगाजी पुलिसपर तमसाइत कहलाह-

“तूँ अनेरे नीकलोकसभकेँ परेसान कए रहल छह । आगा जँ एहनबात होएत तँ नौकरी जा सकैत छह ।”

दरोगाजी रविकान्त आ मधुलिकाकेँ अपना संगे चलबाक इसारा केलथि । दुनूगोटे दरोगाजीक संगे कार्यालय दिस बढ़लाह। थानाक बाहर चारि-पाँचटा पुरान कार/ फटफटिआ सड़ि रहल छल । थानाक भवन जर्जर भए गेल छल। लगैत छल जेना कहिओ ओकर पोताइ नहि भेल अछि ।

आदम जमानाक केबारसभ जेना-तेना लटकल अछि । थानाक फाइलसभ कोठरीसभमे गेटल अछि । सौंसे कोठरीमे जाला लागल अछि । पुलिससभक कुर्सीक पाया टुटल अछि । कहुना कए ओकरा इंटा जोड़ि कए ठाढ़ राखल गेल अछि । सभसँ आश्चर्यक बात ई छल जे ओहनो कुर्सीकेँ चोरी हेबासँ बचेबाक हेतु चेन लगा कए खुट्टासभसँ बान्हि देल गेल छल । आगन्तुक हेतु थानाक बाहर एकटा बेंच राखल अछि जकर एकटा फट्टा गायब अछि । मुदा दरोगाजीक अपन कार्यालय एकदम दुरुस्त छनि । नव-नव कुर्सी-टेबुल,चमचम करैत आल्मीरा ,रंगल-ढंगल देबाल।

“बाहरे दरोगाजी! अपन कोठरी केहन नीकसँ सजओने अछि ।”-रविकान्त मोने-मोन सोचथि ।

दरोगाजी अपन कुर्सीपर बैसलाह आ इसारासँ हिनकोसभकेँ बैसबाक हेतु कहलखिन । दुनूगोटे बैसले छलाह कि थानाक आङनमे बहुत रास लोकसभ एकटा लासकेँ टंगने पहुँचल । ओसभ जोर-जोरसँ नारा लगा रहल छल । क्रमशः थानामे लोकक भीड़ बढ़िते गेल । ओसभ थानेदारसँ तमसाएल छल । कहाँदनि दरोगाजी वलात्कारीकेँ बचा रहल छलैक । तकरे विरोधमे ओसभ थाना आएल छल । पुलिससभ कतबो कोशिश केलक किछु नहि भेलैक । भीड़क आक्रमकता बढ़िते देखि पुलिस लाठी चलबए लागल । लोकोसभ पाथर-रोड़ी-ठेंगा जकरा जे भेटलैक से पुलिसपर चला देलक । बात एतहि नहि ठहरल । एकटा युवक टायरमे आगि लगा देलकैक,दोसरगोटे थानामे ठाढ़ कार,मोटर साइकल सभपर पेट्रोल ढारि कए आगि

लगा देलकैक । किछुगोटे थानाक चारमे सेहो आगि फुकि देलकैक । दरोगाजी हालत बेकाबू होइत देखि थाना छोड़ि कए भागबाक ओरिआनमे छल । मुदा थानामे जमा भेल लोकसभ ओकरा पकड़ि लेलकैक आ बड्ड मारि माड़लकैक । कैकटा सिपाही सेहो मारि खेलक । कैकटा सिपाही तँ थाना छोड़ि कए जान बचेबाक हेतु भागि गेल ।

थोड़बे कालमे थाना सुडाह भए गेल । थानाक कागज-पत्तरसभ स्वाहा भए गेलैक । तकरबाद एसपी,कलक्टर ओतए पहुँचलाह । हुनकासंगे सैकड़ो पुलिस सेहो आएल । माइकपर तरह-तरहक घोषणा कएल जा रहल छल । मुदा जाबे ओ सभ आएल,लोकसभ भागि गेल छल । रविकान्त आ मधुलिका कनी फटकी ठाढ़ रहथि । हिनका दुनूगोटेकेँ जीपमे बैसा कए पुलिस मधुबनी लेने चलि गेल ।

“हमसभ किछु काजे ऐहिठाम आएल रही , हमरासभकेँ एहिसभसँ किछु लेना-देना नहि अछि ।” –

कतबो कहलखिन ओसभ किछु नहि सुनलक । मधुबनीमे हिनका दुनूकेँ हाजतिमे बंद कए देल गेल । रातिमे थानाक लगपासक गामसभमे पुलिस छापा मारलक । जे जतए भेटलैक तकरा पकड़ि कए मधुबनी लेने चलि गेल । पुलिसकेँ ककरो तँ पकड़बाक छलैक। ऊपरसँ ऊच्च अधिकारीसभक आदेश छलैक। तकर पालन कएल गेल । रविकान्त आ मधुलिका फराक-फराक राखल गेल रहथि।

पुलिस महकमामे एहि कांडसँ हरकंप मचि गेल छल । ओसभ सभटा तामस थानाक हाजतिमे बंद लोकसभपर उतारि देलक । रातिभरि ओकरासभक पिटाइ होइत रहल । रविकान्तकेँ सेहो बहुत मारि लगलैक । ओकर बामा हाथक हड्डी टुटि गेलैक । महिला पुलिससभ मधुलिकाकेँ बिरवनि-बिरवनि कए गारि पढ़ैत रहल । प्रातभेने थानाक हाजतिमे बंद सभगोटेकेँ मजिष्ट्रेट लग आनल गेल । सभपर एक सँ एक धारापर केस कएल गेल छल । तेँ जमानतक सबाले नहि छल । मुदा जखन मधुलिकापर मजिष्ट्रेटक नजरि पड़लैक तँ ओ थकमका गेल ।

"एकर की अपराध छैक? "- मजिष्ट्रेट पुछलकैक ।

"सरकार! इहो थानामे राखल कारसभमे आगि आगि लगेबाक हेतु लोखसभकेँ चढ़ा रहल छलि ।" -पुलिस बाजल ।

मधुलिकाकेँ से सुनि नहि रहल गेलैक । ओ चिचिआ उठलि-

"झूठ बाजि रहल अछि ई सभ । हम आ रविकान्त तँ किछु काजसँ थाना गेल रही । दरोगाजीसँ हुनकर कार्यालयमे गप्प करैत रही कि बाहर हल्ला सुनलिऐक । भीड़केँ थानामे आगि लगबैत देखि हमसभ बहुत मोसकिलसँ बाहर भए सकलहुँ। ताबे पुलिस अएलैक , बड़का हाकिमसभ अएलाह आ हमरा दुनूगोटेकेँ जीपमे लेने-देने मधुबनी चलि अएलाह । आब अहीं कहू जे हमरा दुनूगोटेक की गलती अछि ? "

मजिष्ट्रेटकेँ मधुलिकाक बात प्रभावित केलकैक । ओ मधुलिका आ रविकान्तकेँ फराकसँ दुपहरिआक बाद फेरसँ

सुनबाइक हेतु बजओलक । शेषलोककेँ जहल पठा देल गेल। दुपहरिआक बाद फेरसँ सुनबाइ भेल । दरोगाकेँ सेहो बजाओल गेल । ओकरा बहुत मारि लागल छलैक । बाजल नहि होइक । तथापि ओ लिख कए कहलकैक –

“ई दुनूगोटे सहीमे निर्दोष छथि । कार्यालयमे हमरासँ गप्प करैत छलाह कि थानाक बाहर जमा भेल भीड़ उपद्रव करए लागल।”

मजिष्ट्रेट दरोगाक बात सुनलाक बाद रविकान्त आ मधुलिकाकेँ छोड़ि देबाक आदेश देलथि ।

३०

रविकान्त मधुलिकाक संगे थाना गेल रहथि अभयकेँ न्याय दिआबए आ स्वयं फँसि गेलाह,से तेहन कए फँसलाह जे जान बँचाएब मोसकिल भए गेलनि। धन कही ओहि मजिष्ट्रेटकेँ जे हिनकासभपर दया केलक,नहि तँ जहलमे ओहिना सड़ैत रहितथि जेना बेवजह आ जबरदस्ती पकड़ि लेल गेल गामक लोकसभ जहलमे सड़ि रहल छल । मासक-मास बितल मुदा ओकरसभक जमानत नहि भेलैक । कोनो एहन धारा नहि छल जे ओकरासभपर नहि लागल छल । अफसोचक बात रहैत जे ओहिलोकसभमे अधिकांश प्रगतिपथसँ जुड़ल छल। ओ सभ अन्यायपूर्ण घटनाक विरोधमे थाना गेल छल । मुदा भेलैक उल्टा।

मधुलिकाकेँ तँ एहि घटनाक सही कारण कैकदिन बाद अस्पतालमे पता चललैक । रविकान्त हाथक इलाज करबाक हेतु अस्पतालमे भर्ती छलाह । ओही वार्डमे ओहि घटनासँ जुड़ल आओर लोकसभक इलाज ओतहि भए रहल छल । ककरो हाथ टुटल छल तँ ककरो पैर । ओतहि आपसी गप्प-सप्पमे केओ बजलैक-

आखिर एहन उग्र विरोध भेलैक किएक?

"अहाँकेँ सभटा बूझल अछि, तैओ अंठा रहल छी ।"

"हमरा सहीमे नहि बूझल अछि । हम किछुदिनसँ पटना चलि गेल रही । ओतएसँ वापस अएलहुँ ताबे ई कांड भए चुकल छल ।"

"असलमे पुलिसेक दोष छैक।"

"से की ?"

"गामक किछु बदमास छौंड़ासभ ओहीगामक एकटा जबान महिलासंगे गाछीमे वलात्कार कए ओकरा मारि देलकैक। संयोगसँ बदमाससभ दरोगाक कुटुम्बे रहैक । तँ दरोगा एहि मामिलाकेँ नुकाबक क प्रयास केलक । केओ थानापर जाइ तँ ओकरा फज्जति करए लागैक । ई बात स्थानीय नेतासभकेँ पता लगलैक । ओ सभ गौंवासभकेँ चढ़ओलक । तकर बाद जे भेल से तँ बूझले अछि । एहिमे तँ दरोगेक गलती स्पष्ट छलैक । ने ओ पक्षपात करैत,ने एहन कांड होइत ।"

"मुदा आब तँ सातु संगे घुनो पिसा रहल अछि । पुलिस सभटा निर्दोष युवकसभकेँ फँसा देलक अछि ।"

मासदिनक बाद रविकान्तक हाथक प्लास्टर कटल । अखनहु ओकर हाथ सोझ नहि होइत छल । डाक्टरक अनुसार मास-दूमास ओकरा ठीक होबएमे समय लगतैक । तखन जा कए ओकरा हाथ पहिने जकाँ सोझ हेतैक । मुदा एतबा भेल जे ओ आब चलि सकैत छल । जरूरी काज कए सकैत छल । जेलमे सड़ि रहल निर्दोष लोकसभकेँ बचेबाक हेतु ओकरासभकेँ पटना जाएब जरूरी बुझेलैक । ओहिठाम गेलासँ सशक्त प्रयास कएल जा सकैत छल। अस्तु, ओ मधुलिकाक संगे पटना पहुँचल।

पटनामे मधुलिकाक मकानमे जाला लागल छल । बंद घरमे कैकटा साँपक केचुआ पड़ल छल । लागैत छल जेना ओ घर नहि खंडहर होइ। भरिदिन ओकर सफाइ कएल गेल तखन जा कए ओ रहए जोगर भेल । रविकान्त आ मधुलिका भूखसँ छटपट कए रहल छलाह। जेना-तेना मधुलिका खिच्चड़ि बनओलथि । दुनूगोटे खिचड़ि खाए लगपासक कोठरीमे सुति रहलाह । मधुलिका तँ एकहि निन्ने भोर कए देलक मुदा रविकान्त रातिभरि करोट बदलैत रहि गेल । एकाध बेर उठि कए खिड़की लगसँ निभेर सुतल मधुलिकाकेँ देखैत रहल। आखिर भोर भेल। मधुलिका चाह बनओलथि । रविकान्त आलस्यमे पड़ले रहथि। रातुक जगरनाक कारण उठल नहि होनि मुदा रहथि जगले। तेँ मधुलिकाक एकहि आबाजमे ओ उठि गेलाह। दुनूगोटे संगे चाह पिबैत छलाह कि अजुका अखबार आबि गेल । अखबारक मुखपृष्ठपर छपल छल-

“थानाकांडमे पुलिस द्वारा छापामे दसगोटे पकड़ल गेल। गौंवासभ गामसँ   निपत्ता .. ।”

३१

मधुलिका आ रविकान्त समाचार पढ़ि बहुत चिंतित भए गेलथि । प्रगतिपथक कैकटा सदस्यसभ सेहो पकड़ल गेल छल। गाममे लोक अपन-अपन घर छोड़ि देने छल । जाढ़क मासमे यत्र-तत्र बौआ रहल छल । सभक मोनमे डर पैसि गेल रहैक जे कहि नहि करवन पुलिस उठा लेत । कैकगोटे पटना,दिल्ली,लखनउ सहरसभमे अपन परिचितक ओहिठाम नुका गेल । रविकान्त आ मधुलिका एहि समस्याक समाधान हेतु नेताजी ओहिठाम पहुँचलाह । मुदा नेताजी भेंट नहि केलखिन । ककरोसँ कहबा देलखिन-

“नेताजी क्षेत्रमे गेल छथि ।”

“हमसभ हुनके क्षेत्रक लोक छी ।”

“से तँ बुझलहुँ । मुदा ओ क्षेत्रसँ वापस अएताह तखने किछु भए सकैत अछि । अहाँ अपन फोन नंबर आ काज लिखा दिअ । जखने अओताह अहाँसभकेँ फोन कए देब ।”

रविकान्त आ मधुलिका नेताजी ओहिठामसँ वापस भए गेलाह । ओहिठामसँ बाहर निकलि दुनूगोटे सड़कपर ठाढ़ छलाह कि संयोगसँ नेताजी कारमे बैसल देखा गेलखिन । रविकान्त

दौड़ल। नेताजीसँ आखिर ओकरा भेंट भेलैक । मुदा कनीके काल हेतु । ओ कहलखिन-

"हमरासभटा बात बूझल अछि । अखन मामिला गरमाएल छैक। एकरा शांत होबए दिऔक । तकरबादे किछु संभव होएत।"

"कम सँ कम एतबा करबा दिऔक जे निर्दोष ग्रामीणसभकेँ पुलिस तंग नहि करैक । केओ पुलिसक डरे अपन घरमे नहि सुतैत अछि । कतेकोगोटे गाम छोड़ि कए भागि गेल अछि ।"

"अहाँ चिंता नहि करू । हम एसपीसँ गप्प करबैक ।"

एतेक कहि नेताजी आगा बढ़ि गेलाह । जाइत-जाइत मधुलिकाकेँ किछु कहलखिन मुदा ओ सुनि नहि सकलि । कारी,भुट्ट, पातर-छितर बगय-बानि छलनि नेताजीकेँ। मुदा छलाह ओ रसिक स्वभावक । जखनसँ मधुलिकाकेँ देखलखिन,मोन ओतहि अटकि गेलनि। नेताजीसँ भेंट भेलाक बाद रविकान्त आ मधुलिका घर वापस आबि गेलाह ।

"बहुत मोसकिलमे गौंवासभ फसि गेल अछि ।"

"आब जखन एतेक भारी झझटि भेलैक अछि तँ ओकरा सोझराबएमे समय तँ लगबे करतैक ।"

"सही कहि रहल छी । ओकरासभकेँ थाना नहि जरेबाक छल । एहिसँ मामिला बहुत कठिन भए गेलैक ।

"हमसभ तँ गेल रही अभयक मामिलाक पता करए। से तँ किछु भेबे नहि कएल, दोसरे कांड भए गेल ।"

“देखिऔक एहन-एहन कांडसभ पहिनो होइत रहलैक अछि आ आगुओ हेतैक । पहिने लोकसभ अन्यायकेँ सहि जाइत छलैक आ आब तकर विरोध भए रहल छैक ।”

“मुदा ताहिसँ की? अखनो निर्दोष लोकसभकेँ जहलमे ठूसि देने छैक आ केओ किछु नहि कए पाबि रहल छैक ।”

“एहन परिस्थितिमे हमरा लोकनिकेँ की करक चाही? हमसभ गाम वापस चली की?”

“फिलहाल गाम गेनाइ ठीक नहि बूझा रहल अछि । पहिने प्रगतिपथक कार्यकर्ता बाँचल छथि तिनकासभकेँ पटना बजा लिअ। फेर आगा प्रयास कएल जेतैक।”

मधुलिका आ रविकान्त आपसमे इएहसभ गप्प करैत छलाह कि फोनक घंटी बाजल ।

“के बजैत छी? ”

“हम छी नंदन ।”

“की बात? ”

“की कहू? पुलिस हमरो पकड़ि लेलक अछि । कहैत अछि जे अहाँक खिलाफ कैकटा सिकाइति पुलिसकेँ कएल गेलैक अछि। संगहि थानाकांडमे हमर भीडिओ सेहो भेटलैक अछि ।”

“अखन अहाँ छी कतए? ”

“थानामे । पुलिस कहि रहल अछि जे साँझधरि जहल पठा देत।”

ताबतेमे फोन कटि गेलैक । नंदन प्रगतिपथसँ जुड़ल छलाह। गाम-घरमे अन्यायक खिलाफ लड़ैत छलाह। थानाकांडमे सेहो ओ लोकसभकेँ उत्तेजित केने छलाह। मुदा थानामे आगि लगेबाक हेतु तँ ओ नहि कहने रहथिन। एहिमे तँ कोनो षड़यंत्र भेल होइ से संभव । केओ-केओ कहैत छल जे एहिमे नेताजीक आदमीक हाथ छैक । अभय कांडसँ ध्यान हटेबाक हेतु ई सभ कएल गेल । शीलाक पितासँ नेताजीकेँ घनिष्टता छलनि । क्षेत्रमे अएलापर नेताजी हुनकासँ भेंट करए अवश्य अबैत छलाह । ओहीक्रममे हुनकर नजरि शीलापर पड़लनि । शीलाक ओहिठाम नेताजी अबैत- जाइत छलैक । किछुए दिनक बाद शीलाक अभयक संग बिआह भेलैक । ओ एहि बिआहक पक्षधर नहि छलाह । मुदा जनभावना देखि किछु नहि बाजि सकलाह । केओ-केओ इहो बजैत छल जे नेताजीक शीलाक संग अंतरंग संबंध छलैक आ अभयक मृत्युक बाद शीला नेताजीक संगे पटनामे रहैत अछि। जतेक मुँह ततेक तरहक बात । भगवान जानथि सही की अछि? मुदा नेताजीक डर तँ आब रविकान्तोकेँ भए रहल छलनि । ई सभ बात सुनलाक बाद अफसोच होइत छलनि जे बेकारे हुनकासँ भेंट केलहुँ । हुनकर चिंता वाजिब छल । ओहीदिन साँझमे नेताजीक फोन आएल-

“हम छी - नेताजी”

“प्रणाम सर !”

“रविकान्त! अहाँ कोनो बातक चिंता नहि करू । हम ऊपरसँ सभटा ओरिआन कए देलिऐक अछि । समय लगतैक

मुदा सभ ठीक भए जेतैक , सभ छुटि जेतैक । मुदा अहाँकेँ किछु मेहनति करए पड़त । अहाँकेँ मधुबनी जाकए एसपीसँ भेंट करए पड़त । एकगोटेकेँ पटना रहनाइ सेहो जरुरी अछि, तखने काज आगा बढ़त । हमरा विचारसँ मधुलिका पटनामे रहि जाथि आ अहाँ मधुबनीक काज करी ।”

रविकान्तकेँ घीघी लागि गेलनि । किछु बाजल नहि होनि। हुनका नेताजीक इसारा बुझा गेलनि । मुदा उपाय की? भूत घर देखि लेने छल । जान कोना बाँचत? -एही चिंतामे रविकान्त परेसान छलाह कि मधुलिका टोकलकनि-

“ककर फोन छलैक ?”

“गामसँ नंदन फोन केने छलाह । तकरबाद नेताजीक सेहो फोन आएल छल ।”

“नेताजी कोना फोन केलथि? ”

“की कहू ? ”

“हमरा तँ बहुत चिंता भए रहल अछि ।”

“चिंता केलासँ की होएत? समाधान सोचू ।”

दुनूगोटे आपसमे गप्प कइए रहल छलाह कि फोनक घंटी फेर बाजल । कोनो अज्ञात नंबर छल ।

“के छी? ”

“नेताजी ।”

“की समाचार ? ”

“समाचार नीके अछि । आब गामसभमे पुलिसक छापा नहि पड़तैक । जहलमे बंद ग्रामीणसभकेँ जमानत सेहो एक-दू दिनमे भए जेतैक ।”

“ई तँ बहुत नीक समाचार अछि ।”

“अहाँ काल्हि साँझमे हमरासँ भेंट करू तँ किछु आओर समाचार भेटत ।”

“ठीक छैक ।”

तकरबाद फोन बंद भए गेल । रविकान्त केँ चिंतित देखि मधुलिका बाजलि-

“की भेल? ”

“नेताजी काल्हि बजा रहल अछि । हमरा तँ ओकरा ओतए जेबाक मोन नहि होइत अछि ।”

“से किएक? ”

“हमरा तँ ओ उचक्का बुझाइत अछि ।”

“जे अछि,से अछि । हमरा लोकनि प्रगतिपथक काज लए आगा बढ़ि रहल छी । तखन कथीक भय, कथीक चिंता? ”

“सही कहलहुँ ।”

हमसभ पहिने भोजन करी,विश्राम करी भोरे देखल जएतैक ।

भोरे उठि दुनूगोटे ओसारापर चाह पीबैत रहथि।

“नेताजी ओहिठाम जेबाक कार्यक्रमकेँकी कएल जाए?

“ बजबैत अछि तँ चलि जाउ । हम एतहि रहि जाएब । गेलासँ पता तँ लागत जे ओ की कहए चाहैत छथि।

“ठीक छैक ।

“नेताजीक ओहिठाम रविकान्तक नीक स्वागत भेलनि। ओ बड़ीकालधरि हुनकासँ थानाकांडपर गप्प करैत रहलाह । हुनका सामनेमे ओ कैकटा बड़का हाकिमसभकेँ फोन केलखिन।

“अहाँ मधुबनी कहिआ जाएब?-नेताजी पुछलखिन।”

“हमरा अखन पटना छोड़ब संभव नहि अछि । ”

“कोनो बात नहि । हम ककरो पठा देबैक ।”

“जाबे पटनामे छी ताबे अबैत-जाइत रहब।”

रविकान्त नेताजीक स्वागतसँ अभिभूत छलाह । अफसोच होनि जे वो अनेरे चिंतित भए गेल रहथि।

घर आबिकए सभ बात मधुलिकाकेँ कहलखिन । समाचारसभ सुनि कए मधुलिका बहुत प्रसन्न भेलथि ।

“तेँ ने कहैत रही जे अनेरे ककरोपर सक नहि करक चाही।

“आब हमरासभकेँ की करक अछि? ”

“आइ दुपहरिआ धरि प्रगतिपथक कार्यकर्तासभ गामसँ अओताह । हनकासभक व्यवस्था करक अछि ।”

“ठीक छैक ।”

३२

थानाकांड क्रमशः शांत भेल । नेताजीक हस्तक्षेप कारगर भेल । बहुत रास निर्दोष लोकसभकेँ जहलसँ छोड़ि देल गेलैक । गाममे भयक माहौल समाप्त भए गेल । लोकसभ वापस अपन-अपन घरमे आबि गेलाह । जहलसँ छुटलाक बाद हुनका लोकनिक गाममे जोर-सोरसँ स्वागत कएल गेल । नंदनसभक आगा-आगा चलि रहल छलाह । लोकसभ हुनका फूलक माला सँ लादि देलक। तरह-तरहक उत्तेजक नारासभ सेहो लोक लगा रहल छल । ई समाचारसभ सुनि कए रविकान्त आ मधुलिका बहुत प्रसन्न भेलथि।

“आब कम सँ कम लोक अपन घरमे रहत ।”

“सही कहलहुँ । कैकबेर अतिउत्साहमे बहुत गलत भए जाइत छैक । थानाकांडमे सएह भेलैक । किछुगोटेक गलतीक कारण बहुतरास निर्दोष लोकसभ परेसानीमे पड़ि गेल।”

माहौलमे प्रसन्नता देखि रविकान्त बजलाह-

“आब देरी नहि करबाक चाही।”

“कथीमे?”

“लएह । इहो कहबाक काज ।”

“हम एहन लाल बुझक्कर नहि छी । जे कहए चाहैत छी से साफ-साफ बाजू । ”

“आब अहाँकेँ बिआह कए लेबाक चाही ।”

“हमर कुल-शीलक कोनो ठेकान नहि अछि । हमर जाति, धर्म कथुक ठेकान नहि अछि । अहीं कहू एहनमे हमर बिआह समाज होबए देत?”

“समाजक गप्प छोड़ू । एही हेतु तँ हम प्रगतिपथक काजमे फेरसँ धार देलहुँ अछि । समाजकेँ सही रस्ता देखबाक हेतु कोनो भगवान नहि अएताह । ई काज हमरेसभकेँ करबाक अछि ।”

“परिस्थितिवश हमर बिआहक किछु बिध नहि भेल ताहिसँ की? जे हेबाक छल,से भए गेल । बिआह कोनो तमासा नहि छैक जे फेर-फेर होइत रहत । ओना हम तँ अहाँक संगे छीहे आ रहबे करब । अहाँक उद्देश्य बहुत पवित्र अछि । प्रगतिपथक माध्यमसँ अहाँ समाजकेँ बदलबाक जे प्रयास कए रहल छी ताहिसँ हम अभिभूत छी । हम अहाँक संग रहि एहि काजमे सहयोग करबाक हेतु प्रतिवद्ध छी ।”

मधुलिकाक बात रविकान्तकेँ पसिंद पड़लनि । ओ सहमतिमे मूड़ी हिला देलथि

३३

नेताजीक क्षेत्रमे थानाकांड भेल रहैक । तकर फएदा आगामी चुनावमे हुनका लेबाक रहनि । तेँ ओ जेना-तेना लोकसभकेँ जहलसँ छुटबामे मदति केलनि । तकर फाएदो हुनका भेलनि । इलाकामे नेताजीक जय-जयकार होबए लागल। गामसँ भागल लोकसभ वापस गाम आबि गेल छल । नेताजी अपन सफलतासँ दंग रहथि । एक तरफ थानामे आगि लगबओलाह जाहि कारण निर्दोष लोकसभ परेसानीमे पड़ल आ तकरबाद ओकरासभकेँ जहलसँ छुटबामे मदतिओ केलखिन । ई सभ केलाक बाद ओ पटना गेलाह । चुनाव आबि रहल छलैक। टिकटक जोगार करबाक छलनि । ओहि समय मधुलिका आ रविकान्त पटनेमे रहथि । मधुलिकाक घर प्रगतिपथक कार्यालय भए गेल छल । संगहि गाम-घरसँ केओ पटना आबए तँ ओकरा हेतु आश्रय सेहो छल।

साँझमे नेताजी बिना कोनो पूर्व सूचनाकेँ मधुलिकाक घर पहुँचलाह । ओहि समयमे मधुलिका असगरे छलीह । रविकान्त नंदनक संगे किछु जरूरी काजसँ बाहर गेल रहथि । नेताजीक थानाकांडमे गौंवासभकेँ प्रति सहानुभूतिसँ हुनकर

छवि नीक बनि गेल रहनि । हुनका देखितहि मधुलिका बाहर निकलि स्वागत केलथि । अपनेसँ चाह बना कए देलखिन । किछु गप्प-सप्प सेहो भए रहल छल । ओहीबीचमे नेताजी मधुलिकाक हाथ पकड़ि लेलनि। किछु आओर अनट करबाक प्रयास केलनि । नेताजीक व्यवहारसँ मधुलिकाक मोनमे आगि लागि गेलैक , क्रोधसँ मुँह लाल भए गेलैक । हाथ-पैर काँपए लगलैक । लगलैक जेना साक्षात कालीमाता ओकरापर सबार भए गेल होथि । मधुलिका नेताजीक गट्टा पकड़ि ओकरा उठाकए पटकि देलक आ छातीपर चढ़ि गेलि । नेताजी बाप-बाप कए रहल छल। मुदा मधुलिकाक ससरफानीसँ निकसब ओकर वशमे नहि रहैक । मधुलिका चंडीक रूप धए लेने छलि।

नेपथ्यमे केओ शंख फूकि रहल छल । शंखनादक ध्वनि चारूकात पसरि रहल छल ......।

एतबहिमे रविकान्त नंदनक संगे केबारक गेट लग पहुँचल। ओहिठामक दृश्य देखि ओकरासभकेँ बुझबामे देरी नहि भेलैक। ओसभ पुलिसकेँ फोन कए देलक । देखिते-देखिते पुलिसक जीप पहुँचि गेल आ नेताजीकेँ हथकड़ी लगा जीपमे बैसओलक। जीपकेँ चारूकात स्थानीय लोकसभ घेरि लेने छल। रहि-रहि कए ओ सभ “मधुलिका जिंदाबाद !नेताजी मुर्दाबाद!” क नारा लगा रहल छल। बहुत मोसकिलसँ ओ जीप आगा बढ़ि सकल ।

३४

आइ कतेको वर्षक बाद मधुलिका पटना स्थित अपन पैतृक आवासक ओसारापर बैसल छथि । जाढ़क मासक भोरक समय अछि । आइ बहुत दिनक बाद नीक रौद निकलल अछि। मधुलिका कुर्सीपर बैसल चाह पिबि रहल छथि। आइ कहि नहि किएक अखन धरि अखबार नहि आएल अछि । चाह पीबैत-पीबैत कैकटा बितलाहा बातसभ हुनका मोन पड़ैत छनि ।

“ई जीवन थिक । एतए किछु अपन हाथमे नहि अछि। हम जे सोचलहुँ से नहि भेल । जे कहिओ नहि सोचने रही से घटना सभ घटित होइत रहल । सोचने रही जे अभयक संग जीवन नीकसँ आगू बढ़त । परंतु ओ तँ एकहु डेग नहि चलि सकल । किछुदिन लागल जेना जीवन ठमकि गेल । फेर सभकिछु बिसरि रविकान्तक संगे प्रगतिपथक माध्यमसँ समाजक उत्थानक प्रयासमे लागि गेलहुँ । एतेक सालक बादो समाज ओतहि अछि,समस्यासभ ठामहि अछि । मुदा हमर मोनमे ई सोचि कए संतोष होइत अछि जे हम किछु प्रयास तँ केलहुँ । एहन प्रयास जे कतेको परेसान, दुखी लोकक जिनगीमे इजोत आनि सकल । रहल हमर अपन जिनगी। आब तकर कोन हिसाब ? जँ परिस्थिति अनुकूल रहैत तँ भए सकैत अछि जे किछु आओर नीक कएल जा सकैत । मुदा जे भेल ,जे सद्यःदेखि रहल

छी ,सेहो कोनो कम नहि । आइ एहिठाम असगरो बैसल हमरा ताहि बातक संतोष अछि ।”

कपमे चाह खतम भए रहल छल । एतबेमे एकटा वाहन आबि कए ठाढ़ भेल । रविकान्त ओहिमेमे अपन किछु स्वयंसेवकक संगे बैसल छलाह । रविकान्तो बुढ़ा गेल छलाह । दाढ़ी बढ़ओने,उज्जर धप-धप कुरता-धोती पहिरने ओ आत्मविश्वाससँ भरल लगैत छलाह । निरंतर समस्त समर्पणक संगे जनकल्याणक हेतु प्रतिवद्धताक ओ प्रतिमुर्ति बनि गेल छलाह । मधुलिका सेहो तैयारे रहथि । नित्य-निरंतर जकाँ ओहो वाहनक अगिलका सीटपर बैसि प्रगतिपथक काज हेतु बिदा भए गेलि ।........

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.
विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.
महराज (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/196264.
सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/197004.
समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.
मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/199847

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903

The Lost House (Collection of short stories)
https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)
https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।